वर्ष 48 । अंक 8 । अगस्त 2021

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 48 ● अंक 8 ● अगस्त 2021 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-9
हेतु एम. पी. प्रिंटर्स बी-220 फेस-II,
नोएडा-201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-09 से प्रकाशित किया।

प्रबन्ध-सम्पादक
सुलेख साथी

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : editorial@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
38. क्या आप जानते हैं?
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. कभी न भूलो

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

हँसती दुनिया

कविताएं

7. इस झण्डे को प्रणाम करें ...
: डॉ. सत्यनारायण 'सत्य'

7. तिरंगा ध्वज
: मोती विमल

17. राखी बांधो प्यारी बहना
: महेन्द्र कुमार वर्मा

23. भारत वतन
: गोविन्द भारद्वाज

23. पन्द्रह अगस्त मनाएं
: मुमताज हसन

28. बुलबुल रानी
: ऊषा सरीन

28. तितली
: गौरीशंकर वैश्य

39. भारत देश महान
: रंजना राजे

कहानियां

8. जैसा को तैसा
: राधेलाल 'नवचक्र'

16. आजादी
: राजेन्द्र सिंह

19. ऐसे थे शिवाजी
: किशनलाल शर्मा

25. शेर से छुटकारा
: घमंडीलाल अग्रवाल

31. हरियल की सीख
: सुकीर्ति भटनागर

40. स्वार्थी बन्दर
: साबिर हुसैन

46. सीप का मोती
: शिवचरण मंत्री

लेख/विशेष

18. कैसे हुई ब्लड बैंक की शुरुआत
: डॉ. विनोद गुप्ता

21. कहानी डायनासोर की
: गोपाल जी गुप्त

24. पहेलियां
: राधा नाचीज

29. गुरुड़
: किशोर डैनियल

42. खरगोश
: कैलाश जैन

सबसे पहले

वास्तविक स्वतन्त्रता का बोध

स्वतन्त्र अर्थात् आजाद। इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है स्व + तन्त्र। स्व का अर्थ है अपना, मेरा, निज की पहचान। स्व शब्द किसी भी व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व की ओर संकेत करता है। तन्त्र के अनेक एवं व्यापक अर्थ हैं। तन्त्र किसी परम्परा, सिद्धान्त, तकनीक या कार्यप्रणाली को भी कह सकते हैं। इस प्रकार अपने स्व के तन्त्र को, अपने व्यक्तित्व को जानने की विधि या कार्यप्रणाली को स्वतन्त्र कह सकते हैं; तथा केवल अपने स्व के तन्त्र के अनुसार ही चलने वाले को स्वतन्त्रता का बोध हो सकता है किसी और को नहीं।

सामान्यत: हम सभी शिक्षा के लिए स्कूल जाते हैं और कुछ सीख कर आते हैं। सभी विद्यार्थी एक जैसा नहीं सीख पाते; हर कोई अपनी बुद्धि से अपने ढंग से सीखता है। एक समय आता है जब स्कूल की शिक्षा समाप्त हो जाती है और उच्च शिक्षा के लिए उसे कॉलेज, विश्वविद्यालय में भी प्रवेश करना होता है। यहाँ विद्यार्थी प्राय: स्वतन्त्र होता है कि वह जीवन में किस तरफ जाना चाहता है। यही चुनाव तय करता है कि वह जीवन में क्या बनना चाहता है?

हर व्यक्ति का चुनाव अपना होता है। अनेकों बार व्यक्ति वह नहीं कर पाता जिसका वह चुनाव करता है क्योंकि उस चुनाव के लिए भी उसको अनेक नियमों को पूरा करना पड़ता है कि वह उस चुनाव के योग्य है या नहीं। अगर स्कूल की शिक्षा में उतने अंक नहीं ला पाता जितने उस चुनाव के मापदण्ड को पूरा करते हैं तो वह उस विषय या चुनाव को पूरा नहीं कर सकता, इस प्रकार वह किसी और दिशा में जाने को बाध्य हो जाता है।

हम सभी स्वतन्त्र हैं कोई भी कार्य करने में, लिखने में, बोलने में, सोचने में। हम चाहें तो बहुत अच्छा बोलें, अच्छा व्यवहार करें, किसी का दिल न दुखाएं, सभी से प्रेमपूर्वक रहें। बड़ों का अनादर न करें, छोटों का भी सम्मान करें, ईमानदार रहें, अपनी शिक्षा का उचित उपयोग करें, अधिक ज्ञान अर्जित करें इत्यादि। इन सबके साथ-साथ हम हमेशा विवेकपूर्ण रहें। यही तो हमारा निर्णय है कि हम अपने स्वयं को कैसे व्यवहार में लाते हैं, यही हमारी स्वतन्त्रता है।

प्यारे साथियों! हम सभी स्वतन्त्रता के साथ जीना चाहते हैं। पर कोई दूसरा भी अगर अपनी स्वतन्त्रता से जीना चाहता है तो हमें उसकी स्वतन्त्रता का भी आदर करना चाहिए। सृष्टि में एक मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो अपने आपको ऊँचाई के शिखर तक ले जाने में स्वतंत्र है और निचाई के निम्नतर स्तर तक भी ले जा सकता है। यह हम अक्सर देखते भी हैं एक व्यक्ति बहुत प्रेमपूर्ण है तो कोई दूसरा अति क्रूर अर्थात् मनुष्य चाहे तो कल्याणकारी भी हो सकता है और विनाशकारी भी। यह स्वतन्त्रता ही तो है परन्तु इस बात का भी बोध होना या न होना, उसके ज्ञान और अज्ञान पर निर्भर करता है।

यह सत्य है कि बबूल का पेड़ आम पैदा नहीं कर सकता और इसी तरह आम चाह कर भी कोई और फल नहीं हो सकता। कोयल केवल कोयल रहेगी, हंस केवल हंस ही रहेगा। इनके पास कोई उपाय नहीं कि वे कुछ और हो जाएं परन्तु मनुष्य के पास ऐसी क्षमता है, योग्यता है, बुद्धि है, विवेक है। एक श्रृंखला है, ऋषि-मुनियों, ब्रह्मज्ञानी, प्रबुद्ध पुरुषों की, शिक्षकों की, गुरुओं की जिससे वह अपनी अर्जित शिक्षा को और भी निखार दे सकता है। वह सबका हित भी कर सकता है और कल्याण भी। तभी वह वास्तविकता में स्वतन्त्र है अन्यथा नहीं।

-विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ :

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 237

उसदा वी ए गुरु सहारा जिसदा कोई सहारा नहीं।
उसदा वी ए गुरु गुज़ारा जिसदा किते गुज़ारा नहीं।
सत्गुर बाझों पापी बंदे नूं ना कोई परवान करे।
मन दी हंगता सत्गुर लै के अनगिणत एहसान करे।
कहे अवतार ज्ञान दी बख़्शिश जद तीकर हो जांदी नहीं।
जीवन मकसद दी बंदे नूं समझ कदी वी आंदी नहीं।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि संसार में सबसे बड़ा सहारा सद्गुरु का होता है। सद्गुरु ही इन्सान को उसके जीवन का वास्तविक उद्देश्य समझाता है। उसे हर तरह से सहारा देकर जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। सद्गुरु संसार में उसका भी सह. ारा बनता है जिसका कोई सहारा नहीं होता। जिसको कोई पास नहीं बिठाता सद्गुरु उसको भी अपने पास बुलाकर प्यार-सत्कार देता है और जीवन जीने का ढंग सिखाता है। जिसका कोई गुजारा नहीं उसका भी गुरु गुजारा होता है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि पापी से पापी इन्सान भी सद्गुरु की शरण में आकर भव सागर से बड़ी सरलता से पार हो जाता है। पाप कर्म करने वाले पापियों को कोई पास बैठाकर राजी नहीं होता लेकिन सद्गुरु पाप-पुण्य का विचार न करके जो भी शरण में आया उसे अपना बनाकर उसका उद्धार कर देता है। सद्गुरु शरण में आए इन्सान के मन के अहंकार को खत्म करके उसके ऊपर अनगिनत उपकार करता है। मन का अहंकार आदमी के अन्दर काम-क्रोध, वैर-विरोध और स्वयं को ही श्रेष्ठ मानने का भाव पैदा करता है। जिसके कारण वह लोगों से अकारण वैर-विरोध वाला शत्रुवत व्यवहार करता है। ऐसा इन्सान गलत लोगों का संग करके गुनाह करता चला जाता है। इस प्रकार वह बहुमूल्य जीवन को व्यर्थ गंवा देता है। उसको जीवन के वास्तविक मकसद का पता ही नहीं चलता कि मानव जीवन मिला है तो क्या करना है और क्या नहीं करना? सद्गुरु इन्सान को अपने पास बिठाकर उसको ब्रह्म का ज्ञान प्रदान करता है। उसे माया और ब्रह्म का अन्तर बताकर ब्रह्म के साथ जोड़ देता है। इस प्रकार जब ज्ञान की दात इन्सान के जीवन में आ जाती है तब वह जीवन का वास्तविक उद्देश्य समझ जाता है और भक्ति मार्ग पर चलते हुए मुक्ति पद प्राप्त करता है। जब उसको सर्वशक्तिमान परमात्मा का सहारा मिल जाता है फिर वह बेसहारा नहीं रह जाता।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि मन का अहंकार मानव की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है। इस बाधा को दूर करके सद्गुरु गुरसिख पर असंख्या उपकार करता है और समर्थ सद्गुरु के साथ मिलकर वह श्रेष्ठ बन जाता है।

भावार्थ: हरनीत निषाद

संग्रहकर्ता : महन्थ राजपाल

अनमोल वचन

❖ सत्य केवल परमात्मा ही है।

❖ जिस प्रकार नदी अपना पानी स्वयं नहीं पीती, पेड़ अपने फल नहीं खाते। इसी प्रकार सन्त भी परोपकारमय जीवन जीते हैं। वे अपने परोपकारी कार्यों का अभिमान नहीं करते बल्कि परोपकार उनके व्यवहारिक जीवन का हिस्सा होता है, जिससे वे अभिमान से बचे रहते हैं।

– बाबा अवतार सिंह जी

❖ बिना किसी आशा के जो सत्संग करता है वह ही उत्तम भक्त है।

❖ सुख अध्यात्म में है सांसारिक पदार्थों में नहीं।

– निरंकारी राजमाता जी

❖ अच्छी बातों की सराहना करना अच्छी बात है, पर अच्छी बातों को अपनाना और भी सराहनीय है।

❖ अगर सेवा का अभिमान आ जाता है तो वह सेवा व्यर्थ हो जाती है।

– माता सविन्दर जी

❖ महापुरुषों का जीवन हमें याद दिलाता है कि हम भी अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं।

– एच.डब्ल्यू. लांगफेलो

❖ पूर्णतया निन्दित या पूर्णतया प्रशंसित व्यक्ति न था आजकल है और न होगा।

– भगवान बुद्ध

❖ दुश्मनी व ऋण को कभी शेष मत छोड़ो।

– रामचरितमानस

❖ जिस तरह अध्ययन करना अपने आपमें कला है। उसी प्रकार चिन्तन करना भी एक कला है।

– महात्मा गाँधी

❖ प्रेम सबसे करो, भरोसा कुछ पर करो और नफरत किसी से न करो।

– ईसा मसीह

❖ पंखहीन पक्षी पिंजरा बन्द रहने में ही अपनी कुशलता समझता है।

-प्रेमचन्द

❖ क्रोध की अवस्था में दस बार सोचकर बोलो।

– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

❖ मनस्वी वही है जो बीते पर आँसू नहीं बहाता। भविष्य के लिए मनमोहक सपने नहीं संजोता अपितु वर्तमान को ही दुधारु गाय की तरह दूहता है।

– गेटे

❖ उल्लास का प्रमुख सिद्धांत स्वास्थ्य है और स्वास्थ्य का प्रमुख सिद्धांत है कसरत।

– टॉमसन

❖ संसार ही महापुरुष को ढूंढ़ता है न कि महापुरुष संसार को।

– कालिदास

कविता : डॉ. सत्यनारायण 'सत्य'

इस झण्डे को प्रणाम करें ...

एक रहे हम, नेक रहे हम,
यही देश की शान है।
अनेकता में एकता ही,
इस देश की पहचान है।।

जाति अलग, भाषा न्यारी,
वेशभूषा भी प्यारी-प्यारी।
रंग-बोली रूप है न्यारा,
पर एकता ही एक निशान है।।

उत्तर से दक्षिण तक फैला,
पूरब पश्चिम का भरा है थैला।
सागर से हिमालय तक,
सब भारत के प्राण हैं।।

आओ सभी एक काम करें,
इस झण्डे को प्रणाम करें।
जन-जन है प्राणों से प्यारा,
सभी देश की शान हैं।।

बाल कविता : मोती विमल

तिरंगा ध्वज

इन नन्हें-नन्हें हाथों से
तिरंगा थाम चला ऐसे,
या मानो कोई शेर बब्बर
शिकार झपटता हो जैसे।

सीना ताने वज्र कठोर
पांवों में पवन समाया हो,
देश प्रेम का रग-रग में
लाल खून गरमाया हो।

केसरिया कहता कुर्बानी
श्वेत शान्ति का पूजक है,
चक्र हमारा गतिमान
हरा समृद्धि सूचक है।

गौरव से कर सिर ऊँचा
राष्ट्र ध्वज को लहराये,
याद शहीदों की कर के
हर वर्ष तिरंगा फहराये।

कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

जैसा को तैसा

एक नगर था। उस नगर में एक व्यापारी रहता था। उसका नाम था जीर्णधन। जीर्णधन को एक बार अपने व्यापार में काफी नुकसान हुआ। उसकी आर्थिक स्थिति चरमरा गई। उसने अपनी स्थिति को सुधारने की बात सोची।

आखिर में उसने निर्णय लिया कि किसी दूसरे नगर में जाकर कुछ करना चाहिए। बाहर जाने के लिए उसे धन की जरूरत महसूस हुई। उसके पास तो कुछ था ही नहीं। हाँ, पूर्वजों के द्वारा दिया हुआ लोहे का एक मजबूत तराजू उसके पास बचा था। वह उस तराजू को लेकर एक साहूकार के पास गया। फिर उससे बोला– यह तराजू मेरे खानदान की निशानी है। यह मुझे जान से भी प्यारा है परन्तु इस समय आप इसे गिरवी रखकर मुझे कुछ धन दीजिये। मैं बाहर जा रहा हूँ। मुझे रुपयों की अत्यन्त जरूरत है। यथाशीघ्र मैं आपके रुपये लौटा कर इस तराजू को छुड़ा लूँगा।

'जैसी तुम्हारी इच्छा।' कहकर साहूकार ने तराजू लेकर रख लिया और जीर्णधन को जरूरत भर रुपये देकर विदा किया।

दूसरे नगर में जाकर जीर्णधन ने उन रुपयों से व्यापार करना शुरू कर दिया। व्यापार खूब चला। अच्छा-खासा मुनाफा उसे व्यापार में हुआ। वह धन लेकर अपने नगर लौटा। वहाँ आते ही वह सीधे साहूकार के पास गया। फिर उससे कहा– आप अपने रुपये ले लीजिये और गिरवी रखा हुआ मेरा तराजू लौटा दीजिए।

साहूकार यह सुनकर उदास हो गया। वह कुछ बोला नहीं। वास्तव में तराजू देखकर उसकी नीयत खराब हो गई थी। वह तराजू लौटाना नहीं चाहता था उसके मन में लालच आ गया था।

जीर्णधन को बात कुछ समझ में नहीं आई उसने फिर कहा– आप मेरी बात सुनकर उदास क्यों हो गये? मेरा तराजू सुरक्षित है न?

–वही तो रोना है।– साहूकार बोला।

–मतलब?– जीर्णधन ने घबराकर पूछा।

–दरअसल आपके तराजू को चूहे कुतरकर खा गये। मैं उसे लौटाने में असमर्थ हूँ।– साहूकार ने बताया।

कुछ सोचकर जीर्णधन ने मुस्कुराकर कहा– बस, इतनी सी बात है। छोड़िये इसे। मैं बाहर से आ रहा हूँ। स्नान के लिए नदी किनारे जा रहा हूँ। आप एक काम कीजिए।

–कहो–

–स्नान करने के लिए जरूरी सामानों के साथ आप अपने बेटे को नदी किनारे भेज दीजिए।

–तुरन्त भेज देता हूँ।– साहूकार उत्साहित हो बोला।

जीर्णधन वहाँ से चला गया। थोड़ी देर बाद वह स्नान कर साहूकार के पास लौटा। वह अकेला था। साहूकार ने जीर्णधन से पूछा– मेरा बेटा कहाँ है?

यह सुनकर जीर्णधन उदास हो चला। कुछ जवाब नहीं दिया। साहूकार को आशंका हुई। उसने घबराकर जीर्णधन से पूछा– आप चुप क्यों हैं? मेरा बेटा कहाँ है? उसे आपने कहाँ छोड़ दिया?

जीर्णधन रोनी सूरत बनाकर बोला– क्या कहूँ साहूकार जी, जब हम लोग स्नान कर लौट रहे थे तब एक बाज उड़ता हुआ आकाश से नीचे उतरा। वह आपके बेटे को लेकर उड़ चला। मैं देखता रह गया। कुछ नहीं कर सका। बहुत अफसोस है कि मैं आपके बेटे की रक्षा के लिए कुछ नहीं कर सका।

–तुम झूठ बोल रहे हो।– साहूकार ने कहा।

–सही कह रहा हूँ साहूकार जी, मेरी

बात पर विश्वास कीजिए।– जीर्णधन ने अपनी बात पर जोर देकर कहा।

मगर साहूकार नहीं माना। आपस में तू... तू... मैं... मैं... होता रहा। आखिर साहूकार ने जीर्णधन को धमकी दी– मैं अभी राजा के पास फरियाद लेकर जाता हूँ। तुम्हारी करतूत की सजा तुम्हें वहीं मिलेगी।

–जैसा उचित समझो, कर सकते हो।– जीर्णधन ने कहा।

साहूकार झट राजा के पास जा पहुँचा। उसे अपनी फरियाद सुनाई। तत्क्षण जीर्णधन को बुलाया गया। जीर्णधन वहाँ पहुँचा।

राजा ने जीर्णधन से पूछा– आज तक कोई बाज लड़के को लेकर नहीं उड़ा है। तुम क्यों झूठ बोल रहे हो?

–हुजूर! आप ठीक कहते हैं।– जीर्णधन ने राजा से कहा।– मगर लोहे के मजबूत तराजू को आज तक कोई चूहा कुतरकर खा सका है?

नहीं तो!– राजा बोला।

फिर जीर्णधन ने राजा को साहूकार के पास रखे अपने तराजू की पूरी कहानी सुनाई।

सब कुछ सुनकर राजा को सच्चाई मालूम हो गई। वह खूब हँसा। उसने साहूकार को डांटकर कहा– तुम जीर्णधन की तराजू लौटा दो, वह तुम्हारे बेटे को लौटा देगा।

–ठीक है।– दोनों ने राजा की बात मान ली और वे वहाँ से लौट पड़े। ■

संकलनकर्ता : विद्या प्रकाश

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक

राष्ट्रीय पशु बाघ

राष्ट्रीय गान, गीत, वाक्य

राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा

राष्ट्रीय पुरस्कार भारत रत्न

राष्ट्रीय चिन्ह अशोक स्तम्भ

राष्ट्रीय खेल हॉकी

राष्ट्रीय पुष्प कमल

राष्ट्रीय मुद्रा रुपया

राष्ट्रीय पक्षी मोर

राष्ट्रीय मिठाई जलेबी

राष्ट्रीय फल आम

राष्ट्रीय नदी गंगा

राष्ट्रीय पर्व

26 जनवरी	15 अगस्त	2 अक्टूबर
गणतंत्रा दिवस	स्वतंत्राता दिवस	गाँधी जयन्ती

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
- अजय कालड़ा

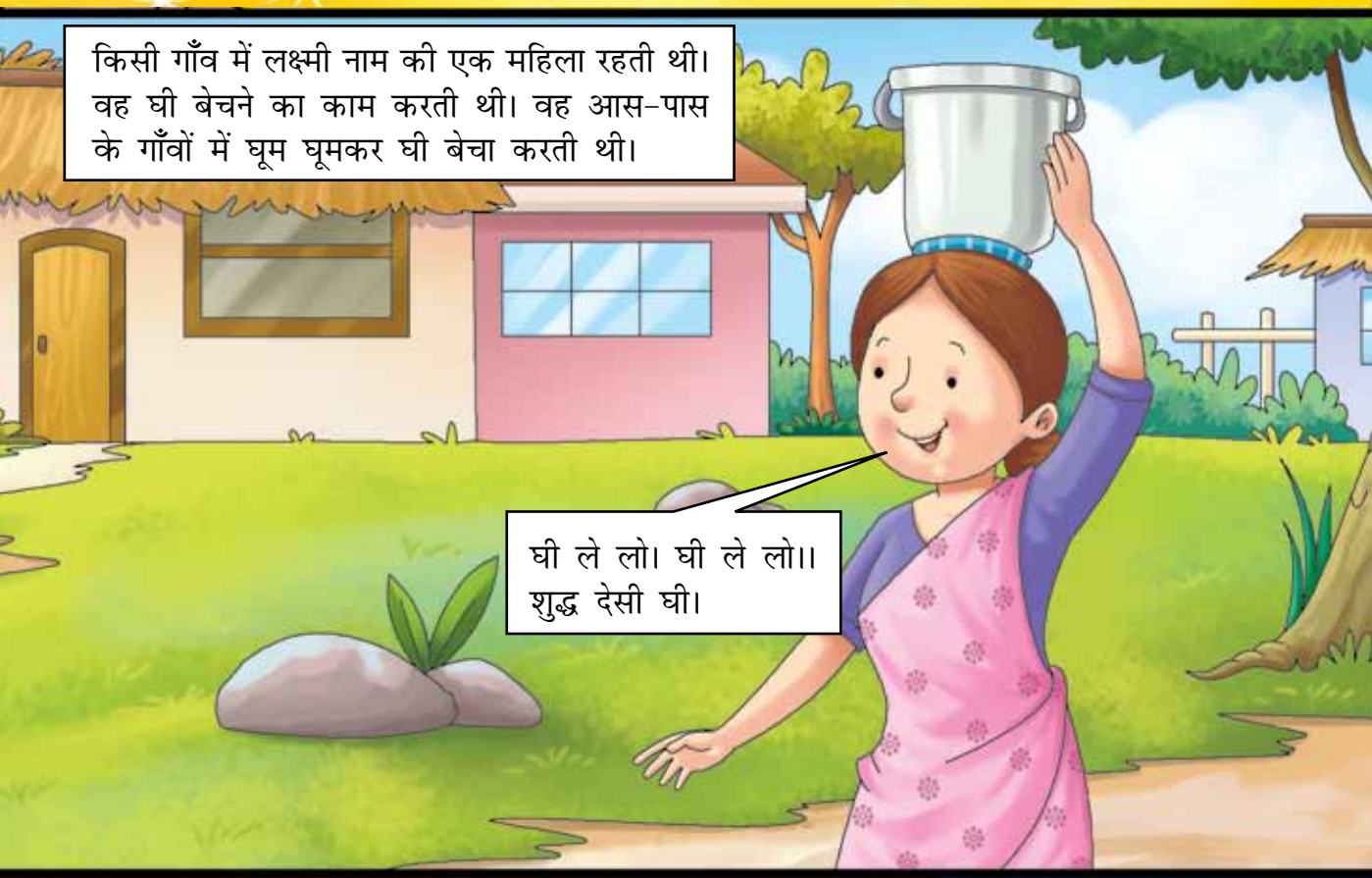

लक्ष्मी आंटी मुझे एक किलो घी देना।
शालू बेटा, अभी तो घी खत्म हो गया। तुम कल आना।
आज का दिन तो बहुत अच्छा रहा सारा घी बिक गया लेकिन मेरा एक ग्राहक खाली हाथ ही चला गया।
लक्ष्मी बहन, मुझे पाँच किलो घी देना।
जी भाई साहब।
हलवाई
लक्ष्मी मुझे भी पाँच किलो घी देना।
ये लीजिए, सुंदर भईया पाँच किलो घी।

क्या लक्ष्मी तुम्हारा घी ही खत्म हो जाता है, हमें तो मिल ही नहीं पाता।
लक्ष्मी ने ऐसे ही घूम घूमकर सारा घी बेच दिया। लेकिन उसके कुछ ग्राहक आज भी बिना घी के रह गए।
मेरी कमाई तो अच्छी हो रही है रही है लेकिन यूँ रोज-रोज ग्राहकों को घी ना मिलना मेरे लिए सही नहीं है मुझे कुछ करना चाहिए।
ये डिब्बा तो भरा हीं नहीं। ऐसे तो मेरी ग्राहक बिना घी के रह जाएँगे। आइडिया, मैं इसमें वनस्पति तेल मिला देती हूँ।
घी ले लो। घी ले लो।। शुद्ध देसी घी।
बहन मुझे तीन किलो घी दे दो।
आंटी, मुझे दो किलों घी दे दो।

शिक्षा : लालच का फल बुरा होता है।

लघु कथा : राजेन्द्र सिंह

आजादी

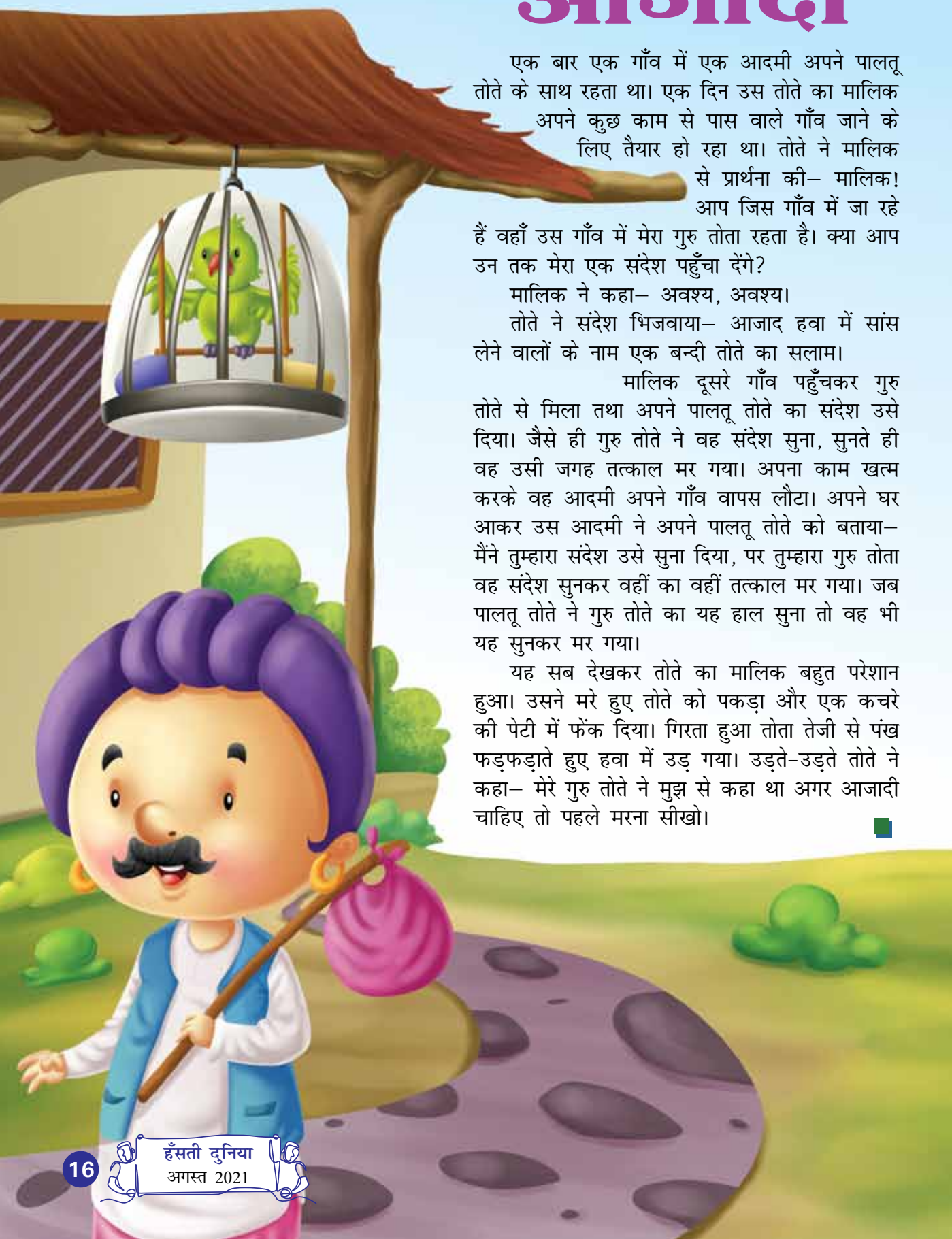

एक बार एक गाँव में एक आदमी अपने पालतू तोते के साथ रहता था। एक दिन उस तोते का मालिक अपने कुछ काम से पास वाले गाँव जाने के लिए तैयार हो रहा था। तोते ने मालिक से प्रार्थना की– मालिक! आप जिस गाँव में जा रहे हैं वहाँ उस गाँव में मेरा गुरु तोता रहता है। क्या आप उन तक मेरा एक संदेश पहुँचा देंगे?

मालिक ने कहा– अवश्य, अवश्य।

तोते ने संदेश भिजवाया– आजाद हवा में सांस लेने वालों के नाम एक बन्दी तोते का सलाम।

मालिक दूसरे गाँव पहुँचकर गुरु तोते से मिला तथा अपने पालतू तोते का संदेश उसे दिया। जैसे ही गुरु तोते ने वह संदेश सुना, सुनते ही वह उसी जगह तत्काल मर गया। अपना काम खत्म करके वह आदमी अपने गाँव वापस लौटा। अपने घर आकर उस आदमी ने अपने पालतू तोते को बताया– मैंने तुम्हारा संदेश उसे सुना दिया, पर तुम्हारा गुरु तोता वह संदेश सुनकर वहीं का वहीं तत्काल मर गया। जब पालतू तोते ने गुरु तोते का यह हाल सुना तो वह भी यह सुनकर मर गया।

यह सब देखकर तोते का मालिक बहुत परेशान हुआ। उसने मरे हुए तोते को पकड़ा और एक कचरे की पेटी में फेंक दिया। गिरता हुआ तोता तेजी से पंख फड़फड़ाते हुए हवा में उड़ गया। उड़ते-उड़ते तोते ने कहा– मेरे गुरु तोते ने मुझ से कहा था अगर आजादी चाहिए तो पहले मरना सीखो।

कविता : महेन्द्र कुमार वर्मा

राखी बांधो प्यारी बहना

प्रीत के धागों के बन्धन में,
स्नेह का उमड़ रहा संसार।
सारे जग में सबसे सच्चा,
होता भाई बहन का प्यार।।

नन्हें भैया का है कहना,
राखी बांधो प्यारी बहना।

सावन की मस्तीली फुहार,
मधुरिम संगीत सुनाती है।
मेघों की ढोल थाप पर,
वसुन्धरा मुस्काती है।।

आया सावन का महीना,
राखी बांधो प्यारी बहना।

धरती ने चन्दा मामा को,
इन्द्रधनुषी राखी पहनाई।
बिजली चमकी खुशियों से,
रिमझिम जी ने झड़ी लगाई।।

राजी खुशी सदा तुम रहना,
राखी बांधो प्यारी बहना।

जानकारीपूर्ण आलेख : डॉ. विनोद गुप्ता

कैसे हुई ब्लडबैंक की शुरूआत

ब्लडबैंक तो प्राय: विश्व के सभी देशों में होते हैं। जहाँ लोग रक्तदान करने जाते हैं और यहीं से यह जरूरतमंद लोगों को दिया जाता है। क्या आप जानते हैं कि इसकी शुरूआत कब हुई?

ब्लडबैंक के जनक डॉक्टर कैप्टन ऑसवाल्ड राबर्टसन को माना जाता है। वे यू.एस.ए. आर्मी में थे। बात 1917 की है। उन्होंने खून को खराब होने से बचाने के लिए सोडियम साइट्रेट का उपयोग किया। खून को 28 दिनों तक अमेरिका कैजुअलटी क्लियरिंग सेंटर में अहम ऑपरेशन के लिए बर्फ में सुरक्षित रखा जा सकता था। रॉबर्टसन ने लाल रक्त कोशिकाओं को बर्फ की बोतल में संरक्षित रखने संबंधी कई प्रयोग किए।

बाद में ब्रिटिश सर्जन जेफ्री कीन्स ने पोर्टेबल मशीन बनाई जिसमें ब्लड को संरक्षित कर आसानी से एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सकता था।

वैसे इसके पूर्व ब्रिटिश सेना ने पहले विश्वयुद्ध के दौरान घायल सैनिकों की मदद के लिए रक्तदान की शुरुआत की थी। खून सीधे एक से दूसरे व्यक्ति में ट्रांसफर किया जाता था।

सरकार ने रक्त को एक ब्लडबैंक से दूसरे ब्लडबैंक तक ले जाने की अनुमति दे दी है। इसे खून की अनुपलब्धता वाले स्थानों पर खून ले जाया जा सकेगा। यह कदम नेशनल ब्लड ट्रांसफ्यूजन काउंसिल की अनुशंसाओं के अनुसार है। अभी तक ब्लड ट्रांसपोर्टेशन का नियम नहीं था। हालांकि इसके लिए कड़ी शर्तें रखी गई हैं ताकि यह रास्ते में खराब न हो। ब्लड तय तापमान और समय पर पहुँचाया जाएगा। किस ब्लडबैंक से कहाँ के लिए ब्लड भेजा गया है उसका पूरा हिसाब रखा जाएगा।

देशभर के ब्लडबैंकों को ऑनलाइन किया जा रहा है। इसमें हर कोई यह देख सकेगा कि किस ब्लडबैंक में किसी ग्रुप का कितना ब्लड उपलब्ध है। यदि एक ब्लडबैंक में किसी ग्रुप का ब्लड नहीं मिलता तो दूसरे ब्लडबैंक से मंगाया जा सकेगा। सरकारी और निजी दोनों तरह के ब्लडबैंकों में उपलब्ध ब्लड की जानकारी आम लोगों के साथ स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को मिल जाएगी। यह पता करना भी आसान होगा कि किस ब्लडबैंक में हर दिन कितना ब्लड इकट्ठा हो रहा है।

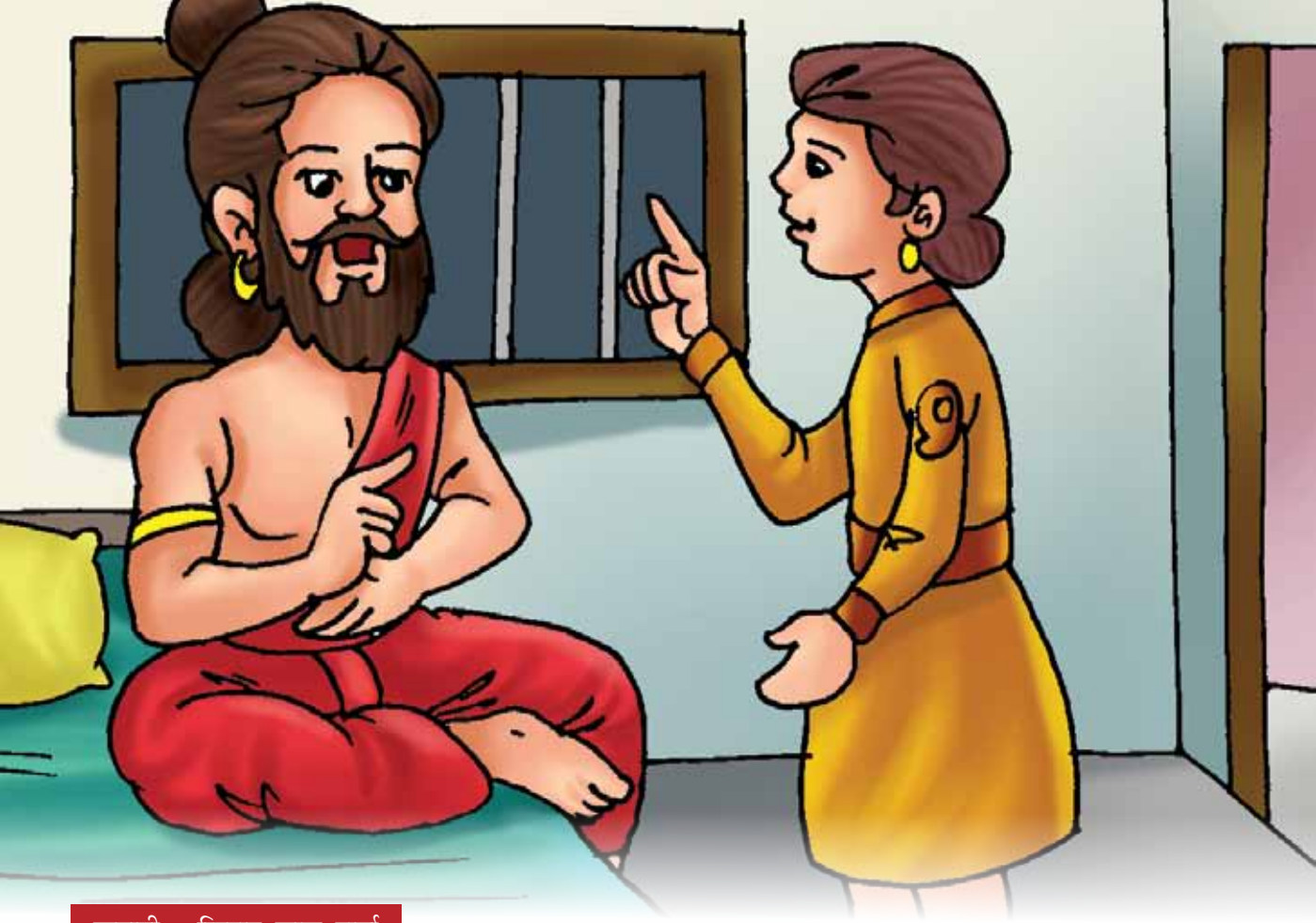

कहानी : किशन लाल शर्मा

ऐसे थे शिवाजी

समर्थ गुरु रामदास, शिवाजी के गुरु थे। एक दिन गुरु के मन में शिष्य की परीक्षा लेने का विचार आया।

वह खाट पर लेटकर जोर-जोर से कराहने लगे। शिवाजी ने जब समर्थ रामदास को तड़पते हुए देखा तो पूछा– क्या हुआ गुरुजी?

–बेटा, मेरे पेट में बहुत तेज दर्द हो रहा है।

–गुरुजी, मैं अभी जाकर वैद्य को बुला लाता हूँ।

–नहीं बेटा। समर्थ रामदास बोले– वैद्य को बुलाने से कोई फायदा नहीं होगा।

–गुरुजी, बिना दवा के पेट दर्द ठीक कैसे होगा?

–शिवाजी ने आगे कहा– उपचार तो करना ही होगा।

–पर बेटा, मेरा दर्द दवा से ठीक नहीं होगा।

–तो गुरुजी, पेट दर्द ठीक कैसे होगा? कोई तो उपाय होगा?– शिवाजी ने गुरुजी से पूछा।

–बेटा, उपाय तो है लेकिन उसे कर पाना सम्भव नहीं है।

–ऐसा कैसे हो सकता है?– शिवाजी बोले– गुरुजी दुनिया में कोई चीज असम्भव नहीं है।

–बेटा, मैं सही कह रहा हूँ। मेरे पेट के दर्द को खत्म करने का उपाय तो है लेकिन उस उपाय को कोई भी नहीं कर सकता।

शिवाजी ने पूछा– गुरुजी, आप बताएं आपके पेट का दर्द ठीक करने का क्या उपाय है?

–शेरनी का दूध।

–क्या मतलब? मैं समझा नहीं।

–समर्थ गुरु रामदास की बात का आशय शिवाजी की समझ में नहीं आया था।

–शेरनी का दूध पीने से ही मेरे पेट का दर्द ठीक हो सकता है।– समर्थ गुरु रामदास बोले– बेटा, शेरनी का दूध तो कोई भी नहीं ला सकता।

–यह कौन सी बड़ी बात है। मैं अभी लेकर आता हूँ।

शिवाजी तुरन्त जंगल में जा पहुँचे। तलाशते हुए वह एक शेरनी के पास जा पहुँचे। शेरनी के सामने हाथ जोड़कर वह बोले– 'मेरे गुरु जी के पेट में दर्द है। पेट का दर्द आपका दूध पीकर ही ठीक होगा। मुझे थोड़ा-सा आपका दूध चाहिए।'

और शेरनी ने चुपचाप शिवाजी को दूध निकालने दिया।

शिवाजी दूध लेकर समर्थ गुरु रामदास के पास पहुँचे और बोले– लो गुरुजी! अब तो आपका पेट दर्द ठीक हो जायेगा।

–बेटा तुम सचमुच वीर हो। समर्थ गुरु रामदास शिवाजी को गले से लगाते हुए बोले– मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था और तुम परीक्षा में पास हुए।

विशेष लेख : गोपाल जी गुप्ता

कहानी डायनासोर की उसी की जुबानी

आज से कई अरब साल पहले धरती का विकास हो रहा था तब चारों ओर जल ही जल था। न तो कहीं पर्वत थे, न वनस्पतियां। फिर लाखों-करोड़ों ज्वालामुखी धरती का सीना चीरकर फूटे और धरती के धरातल पर पठार और मैदानी इलाके बनने शुरू हुए। धीरे-धीरे वनस्पतियां उगी, पर्वतमालाएं बननी शुरू हुई। अनन्त सागर से पर्वत निकलने शुरू हुए। आज जहाँ पर्वत दिखते हैं, वहाँ कभी विशाल सागर था, अथाह जल ही जल।

अब से लगभग 21 करोड़ साल पहले धरती पर कुछेक जीवधारियों के जन्म हुए जिसमें से मैं, यानी डायनासोर भी, एक था। तब तक मनुष्य का अस्तित्व भी नहीं था। हाँ, तो मैं बता रहा था कि मेरी भी एक प्रजाति का जन्म हुआ। धीरे-धीरे मेरी वंश-वृद्धि होने लगी और मेरी भी एक प्रजाति का जन्म हुआ। धीरे-धीरे मेरी वंश-वृद्धि होने लगी और मेरी अनेक प्रजातियां उत्पन्न हुई। जिनमें कुछ विकराल शरीर वाले थे, कुछ छोटे आकार वाले, कुछ भयंकर थे, कुछ शान्त, कुछ चौपाये थे, कुछ छोटे आकार वाले, कुछ शाकाहारी थे कुछ मांसाहारी, कुछ जल में रहते थे कुछ जमीन पर यानी हमारी सभी जातियों के निवास, आकार, आहार, प्रकृति में अन्तर मौजूद था। कुछ प्रजातियों को सींग भी थे। कुछ आगे के पैरों पर खड़े होकर चलते थे कुछ पिछले पैर से। हमारी सबसे बड़ी प्रजाति की लम्बाई 30 मीटर थी। हमारी लगभग 250 प्रजातियां उत्पन्न हो गयी थीं। जिनका वजन 100 टन तक था।

हमारी सारी प्रजातियां अंडे देती थीं। मादा एक बार में 15-20 तक अंडे देती थी। अंडे देने के पहले मादा लगभग 45 सेंटीमीटर व्यास का लगभग 10 सेंटीमीटर गहरा गोलाकार गड्ढा बनाती थी और उसी में अंडा देने के बाद यह नर की जिम्मेदारी थी कि वह अंडा सेये, मादा तो अंडा देने के बाद चली जाती थी। हमारे शावक खुद ही अंडे का कवच तोड़कर बाहर निकलते थे। हमारी कुछ प्रजाति के अंडे वृत्ताकार होते थे कुछ के गोल-मटोल।

हमारी प्रजाति ने इस धरती पर लगभग साढ़े चौदह करोड़ वर्ष तक एकछत्र राज्य किया। उसके बाद, अर्थात् साढ़े छह करोड़ वर्ष पहले, एक बाहरी ग्रह धरती से टकराया जिससे गैस के साथ धूल तथा इरोडियम नामक तत्व वायुमंडल में फैला और हमारा अस्तित्व समाप्त हो गया। हम धरती के गर्भ में विलीन हो गये और आपको अपनी कहानी सुनाने के लिये मैं कंकाल बनकर रह गया और वैज्ञानिकों ने हमारे कंकाल से ही अध्ययन किया।

ब्रिटिश अन्वेषक सर रिचर्ड ओवेन ने 19वीं शताब्दी के पांचवें दशक में, सन् 1842, हमारे विशालकाय कंकाल को देखकर हमारा नामकरण किया 'डायनासोर' जो ग्रीक शब्द डायनस (विशाल) सॉरस (छिपकली) को ही मिलाकर बना था। वैसे हमारी सबसे छोटी प्रजाति बिल्ली के आकार की भी थी।

नोबेल पुरस्कार प्राप्त अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. लुइस अल्वारेज तथा रूसी वैज्ञानिक मिखाइल नाज़ारीब ने चट्टानों का विशेष अध्ययन किया तथा हमारे अस्तित्व को मिटाने वाले बाह्य ग्रह के टक्कर की पुष्टि भी की है।

चलते-चलते मैं बता दूँ कि मेरी एक प्रजाति 'नैन्सी-प्लेसिओसोर' आज भी मौजूद है। यह जलचर है जो रूस की बेकाल झील, न्यूयॉर्क से बारमेंट के जल मार्ग, दक्षिण अफ्रीका की विक्टोरिया झील, चिली, नार्वे, कोलम्बिया, ऑस्ट्रेलिया, स्वीडन, आइसलैंड, कनाडा तथा ब्रिटेन की लॉच नेस झील में देखी गयी है। नैन्सी जल में 120 से 125 किलोमीटर की गति से तैरती है। इसकी लम्बाई 15 से 21 मीटर के बीच की होती है। बर्मिंघम विश्वविद्यालय के डॉ. टामर, बोस्टन के डॉ. रायंस, अमेरिका के डॉ. जॉर्ज न्यूटन, शिकागो विश्वविद्यालय के डॉ. मैकाले आदि ने सन् 1934 में ब्रिटिश अखबारों में ह्यूक ग्रे तथा आर. के. विल्सन द्वारा नैन्सी के खीचे गये चित्रों के प्रकाशन के पश्चात् अध्ययन किया। ये चित्र डेली मेल, डेली रिकार्ड, डेली स्केच नामक समाचार-पत्रों ने प्रमुखता से छापे थे। अकादमी ऑफ अप्लाइड साइंसेज (बोस्टन) के डॉक्टर रायंस ने अकेले लॉच नेस झील के 8000 से भी अधिक चित्र खीचे जिसमें 'नैन्सी-प्लेसिओसोर' स्पष्ट रूप से थी। उन्होंने इसे डायनासोर की ही एक प्रजाति मानी है।

वैसे सन् 1981-82 में भारत के गुजरात राज्य में हमारे अंडे के जीवाशम मिलने से भारतीय वैज्ञानिकों ने भी अनुसंधान प्रारम्भ कर दिये तथा हमारी उपस्थिति को इस भारत की भूमि पर भी प्रमाणित किया।

शायद कोई लेबोरेटरी में आ रहा है, मुझ कंकाल को बोलते देखकर वह भय से मूर्छित हो जाएगा। इसलिये मैं अब चुप हो रहा हूँ फिर कभी और भी बतलाऊंगा।

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

भारत वतन

प्यारी धरती प्यारा गगन है।
सबसे अच्छा भारत वतन है।

बहती जहाँ हैं पावन नदियां,
लहराता है जहाँ तिरंगा।
अलग भाषाएं प्रांत अलग हैं,
फिर भी अपना देश सुरंगा।।

सुन्दर फूलों का यह चमन है।
सबसे अच्छा भारत वतन है।

देवों की ये अद्‌भुत भूमि,
देख इसे हर घाटी झूमी।
खड़ा हिमालय बनकर प्रहरी,
सागर ने तट-माटी चूमी।।

नये युग का नया सपन है।
सबसे अच्छा भारत वतन है।

बाल कविता : मुमताज हसन

पन्द्रह अगस्त मनाएं

आओ पन्द्रह अगस्त मनायें,
जन-जन में खुशियां लुटायें।

मिलजुल कर सब नाचें गायें,
हर छत पे तिरंगा लहराये।

आज न कोई रहे अकेला,
लगे यहाँ एकता का मेला।

भारत का सम्मान बढ़ायें,
आओ पन्द्रह अगस्त मनायें।

तिरंगे की लाज बचाना है,
कर्तव्य से नहीं डिग जाना है।

हिन्दवासियों को जगाना है,
अशिक्षा का तिमिर मिटाना है।

जिन वीरों से मिली आजादी,
आओ शीश उन्हें नवायें।

आओ पन्द्रह अगस्त मनायें,
जन-जन में खुशियां लुटायें।

प्रस्तुति : राधा नाचीज

पहेलियां

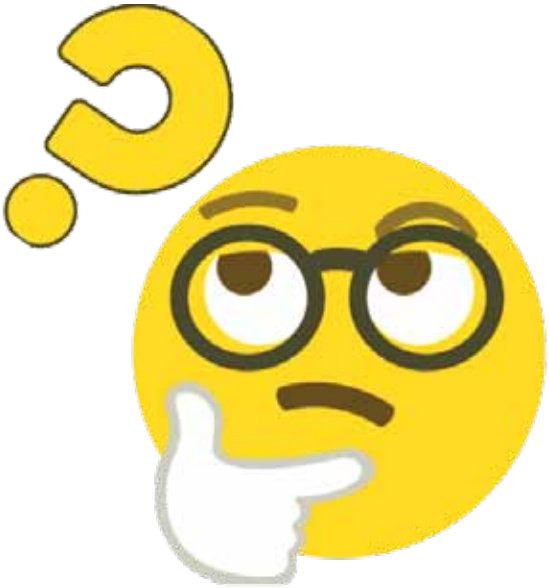

1. महफिल में आए हैं दो भाई,
आते ही उनकी हो गई ठुकाई।
मुँह पर लगे तमाचे खाने,
दोनों लग गये तान सुनाने।।

2. एक मन्दिर में बहत्तर दर,
हर दर में तिरिया का घर।
हर घर में अमृत का ताल,
जो पावे सो होय निहाल।।

3. एक पहेली सदा नवेली,
जो बूझे सो जिन्दा।
जिन्दा में से मुर्दा निकले,
मुर्दा में से जिन्दा।।

4. एक महल में नौ-दस परी,
आपस में सिर लगाकर खड़ी।
जब भी खुलता उसका पट,
जी करता है कर जाऊँ चट।।

5. तारों की जो ओढ़ चुनरिया,
सांझ ढले आ जाती है।
बच्चो, बोलो कौन है वो,
जो चांद से मिलवाती है।।

6. आदि कटे तो गीत सुनाऊँ,
मध्य काटकर संत बनाऊँ।
अन्त कटे साथी बन जाता,
सम्पूर्ण सबके मन भाता।।

7. देखने में हूँ गांठ-गठीला,
खाने में हूँ खूब रसीला।

8. एक राजा की अनोखी रानी,
दुम के रास्ते पीती पानी।

9. बूझो भैया एक पहेली,
जब काटो तो नई नवेली।

10. रोज शाम को आती हूँ मैं,
रोज सवेरे चली जाती हूँ।
नींद न मुझको कोई समझना,
यद्यपि तुम्हें सुलाती हूँ।।

11. रह-रह बजती पर, घड़ी नहीं,
पतली-दुबली पर छड़ी नहीं।
दो मुँह वाली पर सांप नहीं,
सांसें भरती पर आप नहीं।।

12. बरसात में याद दिलाए,
पानी धूप में काम आए।

पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें।

बाल कहानी : घमंडीलाल अग्रवाल

शेर से छुटकारा

सुंदरवन अपनी प्राकृतिक छटा के कारण आस-पास के सभी इलाकों में चर्चा का विषय बना हुआ था। इसमें अनेक जीव-जंतु और जानवर रहते थे। अप्पू हाथी, मटरू सियार, सिनकू गैंडा, गोलू हिरण, हनी बारहसिंगा, चमकू चीता, चालू लोमड़ी, शीलू मोर, कूँ-कूँ कोयल, लपकू बंदर, कालू रीछ, थुलथुल भालू, टॉमी कुत्ता और लम्बू जिराफ आदि। वन का राजा था– गबरू शेर। वन में सुख-शांति और हँसी-खुशी का वातावरण था। कोई भी आपस में नहीं झगड़ता था। कभी-कभार यदि कोई छोटी-मोटी बात हो भी जाती तो आपसी तालमेल से सुलझा ली जाती थी। वन के राजा तक शिकायत नहीं पहुँचती थी।

हर जानवर की अपनी-अपनी अलग विशेषता थी। अप्पू हाथी की चाल मस्तानी थी। मटरू सियार मीठा-मीठा बोलने में माहिर था। सिनकू गैंडा मेहनत करने में आगे रहता था। गोलू हिरण दौड़ने में सदैव बाजी मार लेता था। हनी बारहसिंगा देखने में सुन्दर था। चमकू चीता फुर्तीला था। चालू लोमड़ी झगड़े सुलझाती थी। कूँ-कूँ कोयल कर्णप्रिय गीत सुनाती थी। लपकू बंदर शरारती था। कालू रीछ नाच दिखाने में अव्वल था। थुलथुल भालू अनुशासनप्रिय था। शीलू मोर का नृत्य खूबसूरत व मनमोहक था। टॉमी कुत्ता वफादारी का प्रतीक था। लम्बू जिराफ प्रेम व सहयोग की प्रतिमूर्ति था।

अभी पिछले सप्ताह की ही बात है। लम्बू जिराफ की शादी की पच्चीसवीं वर्षगाँठ थी। पूरे वन को दुल्हन की भांति सजाया गया था। तरह-तरह के पकवान बनाए गए। कालू रीछ और शीलू मोर ने ऐसा डांस किया कि सभी जानवरों सहित वन का राजा गबरू शेर भी बहुत खुश

हुआ। सभी जानवरों ने लम्बू जिराफ को बधाईयां दीं एवं लम्बी उम्र की कामना की।

मजे-मजे में दिन गुजरते जा रहे थे। अचानक गबरू शेर की तबीयत बिगड़ गयी। जानवरों ने अपने राजा का इलाज करवाया। लेकिन शेर ठीक ही नहीं हो पा रहा था। उन्हीं दिनों विदेश से डॉक्टरी पास करके दूसरे वन में एक डॉक्टर आया था, डॉक्टर दयालु। डॉक्टर दयालु अपने नाम के अनुसार ही दयालु भी था और योग्य भी। शेर को उपचार हेतु जानवर उन्हें डॉक्टर दयालु के पास ले गए। डॉक्टर दयालु ने बताया, ''गबरू शेर को मानसिक रोग हो गया है जिसे ठीक होने में थोड़ा समय लगेगा।'' इलाज शुरू कर दिया गया।

एक बरस तक इलाज चला। वन का राजा लगभग ठीक हो चला था। लेकिन उसके व्यवहार में काफी बदलाव आ गया था। अब वह पहले की तरह मिलनसार, दयालु व नेक नहीं रहा। वह चिड़चिड़ा हो चला था। जब भी मौका मिलता वन के किसी जानवर को पकड़कर अपनी गुफा में ले जाता और मारकर खा जाता। एक महीने के दौरान उसने लगभग बीस जानवरों को शिकार बना लिया था।

वन के जानवरों में चिंता की लहर व्याप्त हो गयी। सभी ने इकट्ठे होकर एक सभा आयोजित की।

अप्पू हाथी बोला, ''ऐसे कब तक चलेगा?''मटरू सियार ने कहा, ''हाँ दोस्तों! फिर तो गबरू शेर हम सभी को अपना शिकार बना डालेगा।''

भालू ने सुझाव दिया, ''हमें एक साथ मिलकर उस पर हमला कर देना चाहिए।''

बारी-बारी से अन्य जानवरों ने भी अपने मत रखे। गहन मंथन हुआ। अन्त में निर्णय हुआ कि एक बार उसे चेतावनी देकर सुधरने का मौका देना चाहिए।

रविवार का दिन था। जानवरों ने लपकू बंदर को पूरी योजना समझाकर कहा, ''भाई, होशियारी से काम लेना। राजा को संदेह नहीं होना चाहिए।''

''ठीक है, ऐसा ही होगा।'' लपकू बंदर ने हामी भरी।

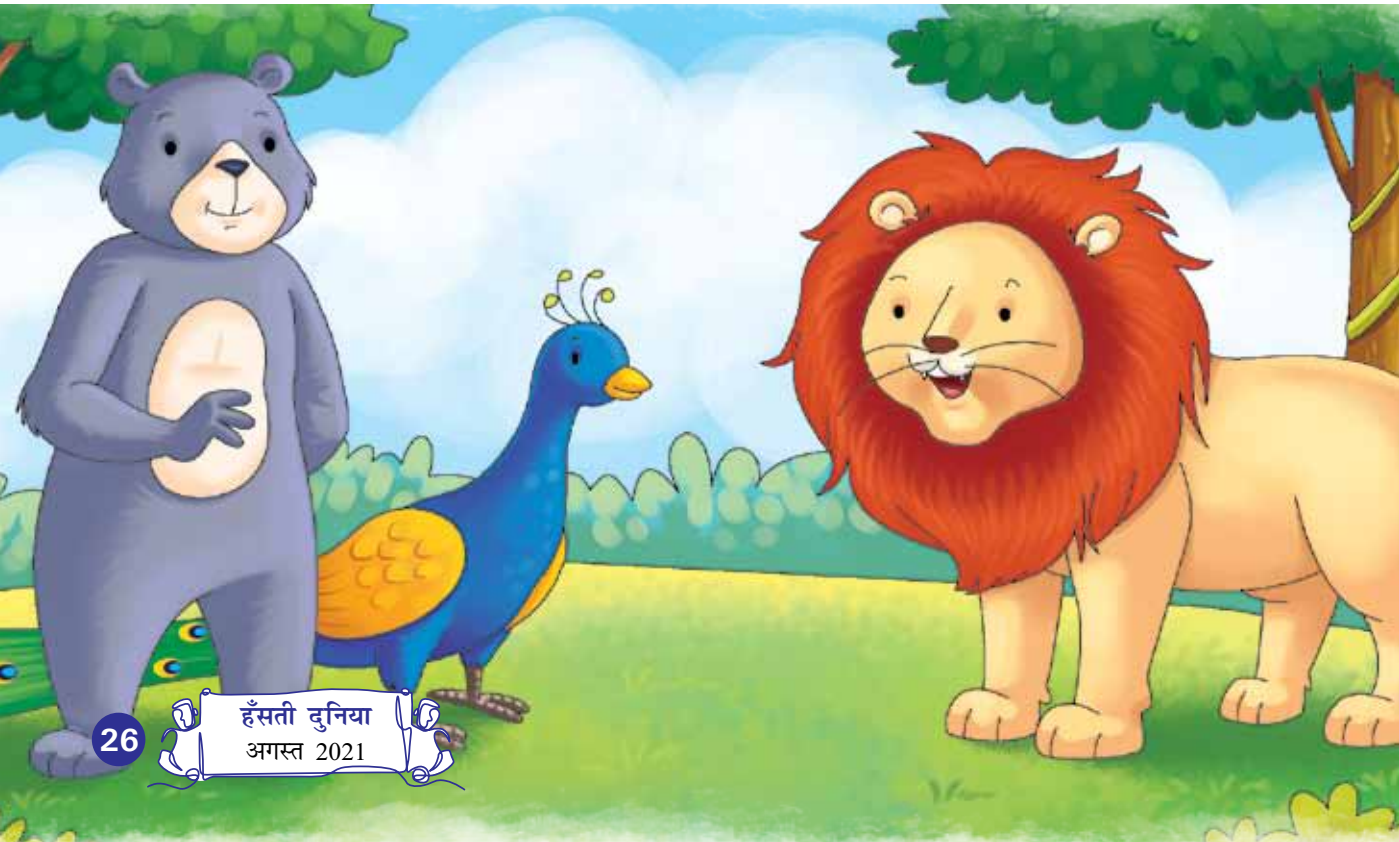

सभी जानवर इकट्ठे होकर वन के दूसरे कोने में छुप गये थे। लपकू बंदर वन के राजा की गुफा के बाहर पहुँचकर बोला, ''महाराज, बाहर निकलो। जानवरों ने आपको खत्म करने की योजना बना रखी है। वे दूसरे वन में गए हैं। कुछ ही देर में आप पर हमला बोलने वाले हैं।''

शेर गुफा से बाहर निकला। लपकू बंदर की ओर देखा तथा वन में घूमने लगा। उसने पाया कि वास्तव में जानवर तो यहाँ हैं ही नहीं। उसने तुरंत लपकू बंदर से सलाह ली, ''तो क्या करूं मैं?'' मेरी जान कैसे बचे इस संकट से?''

''पश्चाताप!'' लपकू बंदर ने जवाब दिया।

लपकू फिर बोल उठा, ''आप जानवरों से हाथ जोड़कर माफी मांग लें और जानवरों को अपना शिकार बनाना भी छोड़ दें।''

शेर ने एकाग्रता से सोचा। फिर बोला, ''ठीक है, मैं ऐसा ही करूंगा। तुम जानवरों को समझा देना कि वे मुझ पर हमला न करें।''

लपकू बंदर ने हामी भरी और शेर को वचन दिया कि वह ऐसा ही करेगा।

कुछ ही देर बाद जानवर लौट आए थे। उन्होंने लपकू बंदर से कुशलक्षेम पूछी तो लपकू बोला, ''सब कुछ वैसा ही है जैसा तय था।''

जानवर खुश हो गए। लपकू बंदर ने शेर को जानवरों के सम्मुख बुलाया। शेर ने हाथ जोड़कर सभी जानवरों से कहा, ''भाइयों और बहनों! मैं तुम्हारा गुनाहगार हूँ। मुझे जो चाहो, सजा दे सकते हो लेकिन मेरे प्राण मत लेना। मैं आगे से किसी भी जानवर को बेवजह नहीं मारूंगा।''

जानवरों के हृदय पसीज गए। उन्होंने शेर का अपराध माफ कर दिया।

कहते हैं न कि पश्चाताप से की गई गलती बिसरा दी जाती है।

दिन बीतने लगे। सप्ताह, मास, बरस, दो बरस। गबरू शेर ने किसी जानवर को बेवजह नहीं मारा। उसका मानसिक रोग भी शायद ठीक हो चुका था क्योंकि उसके व्यवहार में अपेक्षित बदलाव आ गया था।

जानवरों को गबरू शेर के खौफ से छुटकारा मिल गया। वन में खुशियां फिर लौट आई।

बाल कविता : गौरीशंकर वैश्य विनम

तितली

तितली रानी आओ जी।
बैठ हाथ पर जाओ जी।

अपने साथ खिलाओ जी।
अपने साथ खिलाओ जी।

सुन्दर सपने हैं मेरे।
सच करके दिखलाओ जी।

हरी भरी फुलवारी में।
मुझको सैर कराओ जी।

पंख मुझे भी दिलवा जी।
उड़ना मुझे सिखाओ जी।

तुमको नहीं सताऊँगा।
फूलों-सी मुस्काओ जी।

बाल कविता : ऊषा सरीन

बुलबुल रानी

सुबह सवेरे बुलबुल आती,
पेड़ पर बैठ गाना गाती।

देते हैं सब उसको दाना,
क्योंकि उसे जल्दी घर है जाना।

उठते बच्चे सुबह सवेरे,
छोटे-छोटे बच्चे हैं प्यारे।

दाना उन्हें खिलाती बुलबुल,
करते रहते बच्चे चुलबुल।

उड़ना उन्हें सिखाती है,
खाना उन्हें खिलाती है।

ऐसे ही बड़े हो जाते बच्चे,
जो होते हैं मन के सच्चे।

ऐसी है यह बुलबुल रानी,
यही है उसकी सुन्दर कहानी।

आलेख (पक्षी जगत) : किशोर डैनियल

गरुड़

गरुड़ देखने में तो सुन्दर होता ही है साथ ही उसमें अन्य पक्षियों की तुलना में ताकत भी अधिक होती है। यह अपनी तीखी और मजबूत चोंच और पैने नाखूनों से छोटे जीवों को उठाकर ले जाने की क्षमता रखता है। वह सांप को भी उठाकर ले जाता है और खा जाता है।

गरुड़ की यों तो कई जातियां पाई जाती हैं। परन्तु मुख्य रूप से चार प्रजातियां ही देखने को मिलती हैं। ये हैं– सुनहरा गरुड़, शिखाधारी गरुड़, भूरे रंग का गरुड़ और मत्स्याहारी या मछली खाने वाला गरुड़।

सुनहरा गरुड़ : यह लाल और भूरे रंग हो होता है। आकार में यह तीन फीट से भी बड़ा होता है। इसके सिर तथा गर्दन का रंग पीलापन लिए होता है। यह पहाड़ी और मैदानी दोनों इलाकों में रह लेता है। हिमालय के पहाड़ी इलाकों में कई सुनहरे गरुड़ पाये जाते हैं।

यह छोटे पक्षियों, सांप, खरगोश आदि का शिकार करता है। यह शिकार पर बाज की भांति झपट्टा मारकर वार करता है।

ये अंडे देने के लिए चट्टानों की चोटी पर तिनकों की सहायता से मजबूत मचान की भांति अपना घोसला बनाते हैं। मादा गरुड़ एक बार में दो अंडे देती है। 40 दिन तक अंडे सेने के बाद इनके बच्चे अंडों से बाहर आते हैं और लगभग दस सप्ताह बाद इनके बच्चे घोसले से निकल जाते हैं।

शिखाधारी गरुड़ : गहरे कत्थई रंग वाले इस गरुड़ के सिर पर पीछे की तरफ काले तथा सफेद रंग की चोटी या शिखा स्पष्ट रूप से दिखती है। गिरगिट, मेढक, सांप, जंगली मुर्गी आदि इसके मुख्य भोजन हैं। शिखाधारी गरुड़ की मादा सिर्फ एक ही अंडा देती है। हिमालय तथा उत्तर भारत के पर्वतीय प्रदेशों में पाई जाने वाली गरुड़ की यह प्रजाति 'स्पिलोर्निस चील' कहलाती है।

भूरे रंग का गरुड़ : भारत के भारी वर्षा वाले क्षेत्रों को छोड़कर यह गरुड़ प्राय: सभी क्षेत्रों में पाया जाता है। इसके शरीर पर दूसरे कई रंगों की आभा होती है। इसकी चोंच मोटी मजबूत तिरछी और तीखी होती है। इसके दोनों पैर उंगलियों तक पंखों से ढके रहते हैं।

इस प्रजाति की मादा गरुड़, नर गरुड़ से बड़ी होती है। नर व मादा दोनों आकाश में मंडराकर अपना भोजन तलाशते हैं। ये गरुड़ छोटे खरगोश, मुर्गी, चूहे, सांप आदि को अपने पंजों से उठाकर ले जाते हैं और आराम से किसी ऊँची चट्टान या पेड़ पर बैठकर खाते हैं। ये अपना घोसला बबूल जैसे कांटेदार पेड़ों की चोटी पर बनाते हैं।

मत्स्याहारी गरुड़ : इस गरुड़ का मुख्य भोजन मछलियां हैं इसलिए इसे मत्स्याहारी अथवा 'रिंगटेल्ड फिशिंग ईगल' कहते हैं। यह विशेषतया उत्तर भारत और पाकिस्तान में पाया जाता है। इसके पंख काले, सिर, पेट और पीठ का रंग सफेद तथा सुनहरा पीलापन लिए होता है। सर्दी के दिनों में यह नदियों, तालाबों, झीलों के करीब रहता है। यहीं पर वह अक्सर मछलियों के शिकार के लिए लपकता है। ये अपना घोसला ऊँचे पेड़ों पर बनाता है जिसमें मादा गरुड़ दो या तीन अंडे दती है।

गरुड़ एक आकर्षक पक्षी है। जिसकी संख्या हमारे देश में निरन्तर घट रही है। जीव वैज्ञानियों के लिए यह एक चिन्ता का विषय है।

बाल कविता : रामअवध राम

आजादी हमने पाई है

बड़ी मुश्किलों से बच्चों,
आजादी हमने पाई है।
रखना संभाल कर इसको,
स्वतंत्रता सुखदाई है।

कितने ही वीरों ने इसके लिए,
अपनी जान गंवाई है।
उनकी ही कुर्बानी,
देखो आज रंग लाई है।

बापू सुभाष जवाहर के,
मेहनत की कमाई है।
नाम हमारे कर आजादी,
दुनिया से ली विदाई है।

बाल कहानी : सुकीर्ति भटनागर

हरियल की सीख

एक दिन कालू भालू का बेटा लालू बाग में बैठा एक जासूसी उपन्यास पढ़ रहा था जिसमें एक ऐसे तोते का वर्णन था जिसने एक समय किसी मुसीबत में फंसे अपने मालिक की रक्षा की थी। बस, तभी से उसने सोच लिया कि वह भी एक तोता पालेगा और जल्द ही उसकी यह इच्छा पूरी भी हो गई। एक सुबह सूरजमुखी के फूल पर बैठे हरियल तोते को चुपके से पकड़कर उसने पिंजरे में डाल दिया।

कुछ दिन तो हरियल बड़ा खुश रहा, पर धीरे-धीरे उसे खुले जंगल की याद आने लगी। पिंजरे में बैठे-बैठे उसके पैर दुखने लगे और पंखों का लचीलापन समाप्त हो गया। लालू हर सुबह पिंजरे को घर से बाहर अमरूद के बड़े पेड़ पर टांग देता। उस दिन भी हरियल हमेशा की तरह पिंजरे में उदास बैठा था कि उसे धुनिया तोते की आवाज़ सुनाई दी जो चुग्गे की तलाश में उड़ता-उड़ता उस तक पहुँच गया था।

'अरे भाई हरियल तुम यहाँ कैसे? पर लगता है बड़े प्रसन्न हो, तभी तो इतने मुटिया गये हो।' धुनिया तोते ने हँसते हुए पूछा तो हरियल रो पड़ा। उसे रोते देख धुनिया हैरान रह गया, 'तुम रो किसलिए रहे हो हरियल? तुम्हें तो खुश होना चाहिए। कालू भालू के आलीशान बंगले में रहते हो, जहाँ तुम धूप और वर्षा से बचे रहते हो। कूलर की ठंडी हवा में सोते हो और फ्रिज का ठंडा पानी और शर्बत पी-पीकर निहाल होते हो।' मुझे देखो, सारा दिन खाने की तलाश में मारे-मारे फिरना

पड़ता है, फिर भी रूखा-सूखा ही जुटा पाता हूँ और तुम आराम से बैठे-बैठे फल, मिठाई और चूरी खाते हो। भई मुझे तो तुमसे ईर्ष्या होने लगी है। अगर मैं तुम्हारी जगह इस पिंजरे में होता तो तुम्हारी तरह रोता नहीं बल्कि जिन्दगी के मजे लूटता।

'देखो धुनिया, तुमने वह कहावत तो सुनी होगी 'जिस तन लागे सो तन जाने' इसलिए आजकल जो मुझ पर बीत रही है उसे तुम नहीं समझ सकते। पर इतना जान लो जो सुख और शान्ति स्वतंत्र रहने में है वह कैदखाने में नहीं। इसलिए भूलकर भी कैदी बनकर रहने की बात मत सोचना। बल्कि मुझे भी यहाँ से निकालने की कोशिश करो। यहाँ रहते-रहते तो किसी दिन मेरा दम घुट जाएगा।' इतना कहकर हरियल फिर सुबकने लगा।

'कितना मूर्ख है यह हरियल। इतने आराम से रहते हुए भी हर समय रोता रहता है। आखिर सारा-सारा दिन जंगल में आजाद घूमने से मिलता भी क्या है? वही कच्चे-पक्के, सड़े-गले फल और नदी किनारे का हमेशा एक-सा स्वाद देने वाला पानी। और इस हरियल को देखो। बैठे-बिठाए बढ़िया भोजन मिल जाता है, इसलिए नखरे दिखा रहा है। खैर मुझे इससे क्या? यदि यह यहाँ नहीं रहना चाहता तो न सही पर मैं यह सुनहरी मौका हाथ से नहीं जाने दूंगा। उसके पिंजरे से बाहर आते ही मैं उसकी जगह जा बैठूंगा।' यह सब सोचते हुए उसने हरियल की ओर दृष्टि घुमाई और बोला– 'देखो भाई, अब यह रोना-धोना छोड़ो और पिंजरे से बाहर आने के लिए तैयार हो जाओ। मैं तुम्हार मित्र हूँ। तुम्हें इस तरह दु:खी और परेशान देख भी कैसे सकता हूँ। कुछ-न-कुछ तो करना ही पड़ेगा। अच्छा रूको, मैं जरा देखकर आता हूँ कि लालू कहाँ है। अगर वह आस-पास न दिखाई दिया तो यही सही मौका है तुम्हें आजाद करने का।'

इतना कहकर वह दूर-दूर तक लालू को देख आया पर वह कहीं दिखाई नहीं दिया। 'अब मैं हरियल को आराम से पिंजरे से बाहर कर उसके स्थान पर बैठ सकता हूँ। हमारी एक-सी सूरत होने के कारण लालू जान भी नहीं पाएगा कि हरियल उड़ गया।' ऐसा सोचते हुए उसका मन खुशी से उछलने लगा और वह तेजी से उड़ता हुआ हरियल के पास जा पहुँचा और पिंजरे का दरवाजा खोल दिया। हरियल पहले से बाहर जाने के लिए तैयार बैठा था। किन्तु जैसे ही वह पिंजरे से निकलकर उड़ने को हुआ फौरन ज़मीन पर जा गिरा। महीनों पिंजरे में बन्द रहने के कारण उसके पंखों में पहले जैसी स्फूर्ति नहीं रह गई थी। इससे पहले कि वह फिर से उड़ने की कोशिश करता एक बिल्ली जो घात लगाये बैठी थी उसे मुँह में दबाये झाड़ियों में जा छिपी। यह सब कुछ इतनी जल्दी में हुआ कि धुनिया कुछ भी सोच न सका और अवाक् बैठा का बैठा रह गया।

अब तक वह बिल्ली का भोजन बन चुका होगा। उसने सोचा और एक नज़र खुले पिंजरे पर डाली और दहशत से भर गया। इतनी दर्दनाक घटना को अपनी आँखों से देख लेने के बाद उसे हरियल की बात की सच्चाई समझ में आ गई कि आज़ादी से बढ़कर जीवन में कुछ नहीं, भले ही मेहनत करके रूखा-सूखा खाकर ही जीना पड़े। इस विचार के आते ही वह उड़न-छू हो गया।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
आर्यमन प्रजापति

किट्टी झूठ मत बोलो, बताओ क्या बात है?
आज मेरा जन्मदिन है और किसी ने मुझे मुबारकबाद नहीं दी, मम्मी भी भूल गई इस बार मेरा जन्मदिन!
बस इतनी सी बात और तुम रो रही हो! चलो, आंसू पोछों! मम्मी घर के कामों में व्यस्त होंगी इसलिए भूल गई होंगी, नहीं तो वह हमेशा तो तुम्हारा जन्मदिन मनाती थी न!
हाँ तुम ठीक कह रही हो, ऐसा ही हुआ होगा।
किट्टी स्कूल के बाद मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे घर चलूँगी और वहाँ चलकर तुम्हारा जन्मदिन मनाएंगे।
पक्का मिन्टी! हाँ हाँ तुम जरूर चलना मेरे घर!

किट्टी चलो, स्कूल की छुट्टी हो गई।
हाँ चलो मिन्टी तुम भी देखना घर में किसी को भी मेरा जन्मदिन याद नही है।
यह है मेरा घर, चलो अन्दर चलो मिन्टी! अरे ये क्या घर में इतना अंधेरा क्यों है? तुम रूको मैं देखती हूँ। ऐसा लग रहा है कि घर में शायद कोई नही है?
किट्टी कहीं लाईट तो नही चली गई?
मिन्टी तुमने ठीक कहा चलो, लाइट चालू करके देखती हूँ। अरे लाइट तो आ रही है।
अरे किट्टी घर की सजावट तो देखो कितना सुन्दर सजा हुआ। कितने सुन्दर रंग-बिरंगें गुब्बारे लगे हुए है।
अरे यह तो केक है और इस पर तो मेरा नाम लिखा हुआ है।

जन्मदिन बहुत-बहुत मुबारक हो किट्टी बेटा! यह लो अपने जन्मदिन का तोहफा!
मम्मी जी आप! क्या आपको मेरा जन्मदिन याद था?
हाँ बेटा, और मैं कैसे भूल सकती हूँ कि आज मेरी रानी बेटी का जन्मदिन है।
किट्टी रानी मम्मी बहुत ही अच्छी होती है वह कभी हमारा जन्मदिन नहीं भूलती है। वह हमसे बहुत प्यार करती है।
तुमने ठीक कहा मिन्टी, मम्मी सच्ची में बहुत ही अच्छी होती है।
चलो, किट्टी बेटा, अब अपने जन्मदिन का केक काटो, और मिन्टी को खिलाओ।
हाँ हाँ मम्मी जी और आप सभी का बहुत धन्यवाद! मैं अपना यह जन्मदिन कभी नहीं भूल पाऊँगी।

संग्रहकर्ता : डॉ. रतिराम सिंह

क्या आप जानते हैं?

- शुतुरमुर्ग के अण्डे का भार साढ़े तीन पाउण्ड होता है।
- शुतुरमुर्ग की आँख का आकार उसके दिमाग से भी बड़ा होता है।
- हमिंग बर्ड अकेली ऐसी चिड़िया है जो विपरीत दिशा में उड़ सकती है।
- उल्लुओं के दाँत नहीं होते हैं।
- मादा उल्लू नर उल्लू से आकार और भार में बड़ी होती है।
- बाज की नजर बहुत ही तेज होती है। वह एक मील की ऊँचाई से चूहे की स्थिति को सही-सही देख सकता है।
- अल्बाट्रॉस पक्षी के पंखों की लम्बाई सर्वाधिक होती है।
- कुछ जीव अपना रंग बदलने में माहिर होते हैं क्योंकि इनकी त्वचा में उपस्थित क्रोमेटोफोर रंजकों के कारण ऐसा होता है।
- सीपी का बाह्य आवरण कैल्शियम कार्बोनेट के बने होते हैं।
- सबसे अधिक ऊँचाई पर उड़ने वाला पक्षी गिद्ध है।
- संसार में सभी जीव सूर्य की ओर देख सकते हैं, सिवाय चील के। चील सूर्य की ओर नहीं देख सकती।
- पांडा भालू के आहार में 99 प्रतिशत हिस्सा बांस का ही होता है।
- चमगादड़ चल नहीं सकते। दरअसल, इनके पैरों की हड्डियां इतनी पतली होती हैं कि उन्हें चलने में असुविधा होती है।
- एक मधुमक्खी चार हजार फूलों से रस लेती है तब जाकर वह एक बड़ा चम्मच शहद तैयार कर पाती है।
- मधुमक्खी की आँखों में बाल होते हैं।
- ऑस्ट्रिया की मुद्रा यूरो है।
- लखनऊ शहर गोमती नदी के किनारे स्थित है।
- ब्राजील की राजकीय भाषा पुर्तगीज है।
- हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक नमक की एकमात्र खान मण्डी जिला के गुम्मा व द्रंग में है।
- लोकसभा तथा राज्यसभा की संयुक्त बैठक की अध्यक्षता लोकसभा अध्यक्ष करता है।
- अफ्रीका महाद्वीप में सबसे अधिक देश हैं।
- गाँधी सागर बांध चम्बल नदी पर बना है।
- अंतरिक्ष में अंतरिक्ष यात्री डकार नहीं ले सकते।
- दरियाई घोड़े का पसीना गुलाबी रंग का होता है।
- बिल्लियां अल्ट्रासाउण्ड सुन सकती हैं।
- शहद कभी न खराब होने वाला भोज्य पदार्थ है।

बाल कविता : रंजना राजे

भारत देश महान

हमारा भारत देश महान,
प्यारा भारत देश महान।
सत्य, शान्ति और प्रेम का,
संदेश सबको दे रहा महान।।

ज्ञान की किरणें उदित हुई,
सर्वप्रथम भारत भूमि पर।
भगत-आजाद अवतीर्ण हुए,
इस मंगल देवो भूमि पर।।

जब भी संकट गहराया है,
हमने उसको सुलझाया है।
अपने सामर्थ्य का हमने,
विश्व से लोहा मनवाया है।।

आन-बान की रक्षा करती,
हम भारत माँ की संतान।
सबसे प्यारा देश हमारा,
अपना भारत देश महान।।

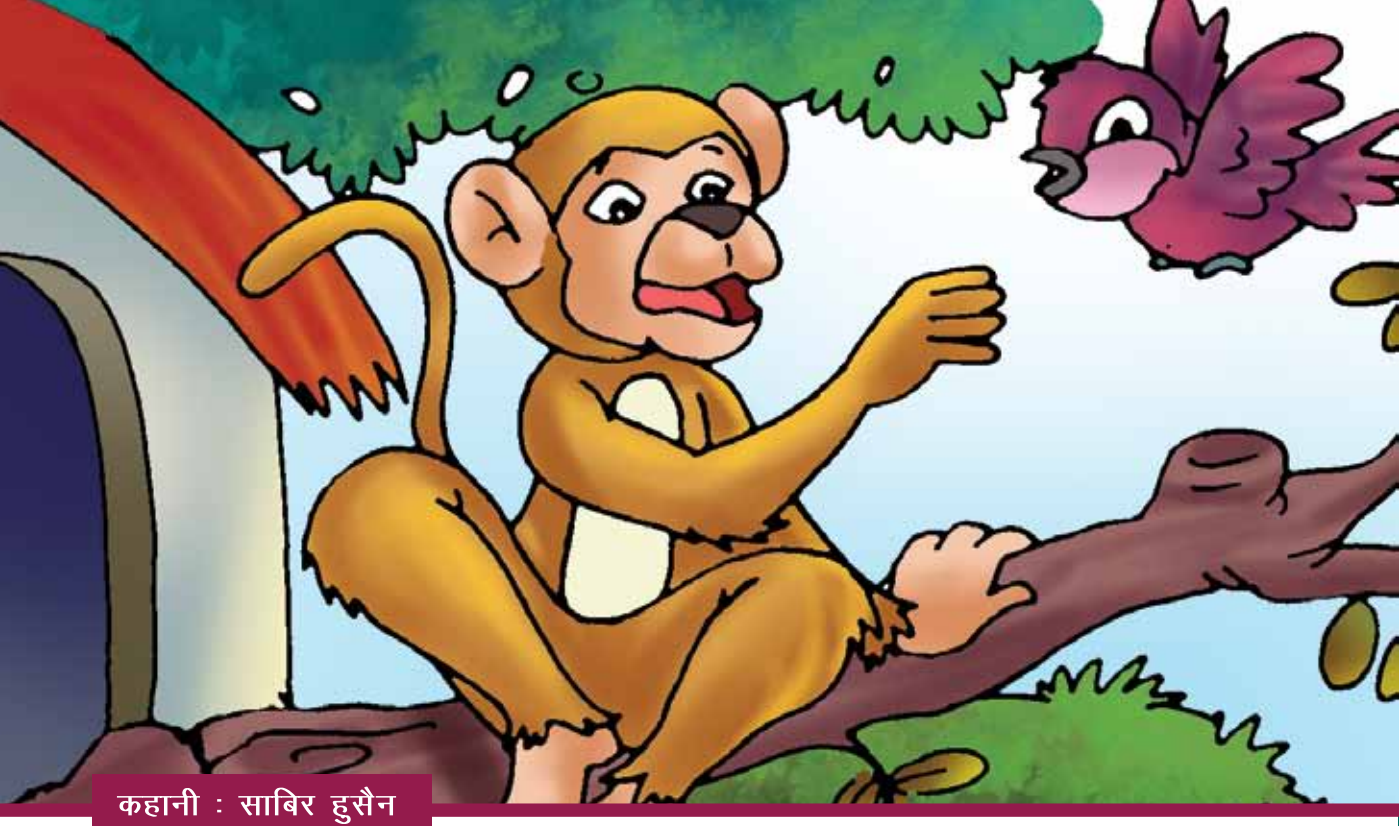

कहानी : साबिर हुसैन

स्वार्थी बन्दर

बहुत समय पहले की बात है। उस समय पृथ्वी पर चारों ओर जंगल ही जंगल थे।

जंगल में बन्दर रहता था। वह घास-फूस और लकड़ी आदि से बहुत सुन्दर घर बनाना जानता था। उसने अपने रहने के लिए पेड़ पर बहुत ही सुन्दर घर बनाया था। घर बनाने की कला पर उसे बड़ा घमण्ड था। जंगल के अन्य पशु-पक्षी, बन्दर से बार-बार घर बनाने की विधि बताने का आग्रह करते किन्तु वह हर बार साफ मना कर देता। उसने जंगल के राजा सिंह को भी घर बनाने की विधि बताने से इंकार कर दिया।

उसी जंगल में एक बया नाम का पक्षी भी रहता था। उसने भी बन्दर से कई बार अनुनय-विनय की कि वर्षाऋतु आने वाली है। वर्षा से बचाव के लिए वह घर बनाने की विधि बता दे किन्तु बन्दर घमण्ड के कारण उसका अपमान करके भगा देता। वह किसी को भी अपने घर में घुसने नहीं देता।

बया पक्षी ने अथक परिश्रम से अपने लिये घर बनाना शुरू कर दिया और वर्षा शुरू होने तक उसने एक बड़ा-सा घर बना लिया। यह घर भद्दा और कमजोर था। फिर भी बया बहुत खुश था।

एक दिन तेज वर्षा शुरू हो गई। सभी पशु-पक्षी इधर-उधर भागने लगे। बन्दर अपने घर में आराम से बैठा जानवरों को इधर-उधर भागते देख हँस रहा था। बया ने अपने घर में बहुत से पक्षियों को आश्रय दिया। दूसरी ओर बन्दर आश्रय मांगने वालों को भगा देता। अचानक वर्षा के साथ तेज हवा चलने लगी। बया का घर टूटने लगा। उसके अन्दर बैठे पक्षी घबराकर रोने लगे। जंगल में चारों ओर त्राहि-त्राहि मची हुई थी और बन्दर बैठा हँस रहा था।

वन देवता को बन्दर पर बड़ा क्रोध आया। वे प्रकट हुए। उन्होंने बन्दर से पूछा, 'तुमने अपने घर में दूसरे जानवरों को आश्रय क्यों नहीं दिया?'

'मेरा घर है, मैं किसी को क्यों रखूं?' बन्दर घमण्ड से बोला।

वन देवता क्रोध से तिलमिलाकर बोले, 'जा स्वार्थी बन्दर, सभी का अपना घर होगा लेकिन तेरा घर कोई नहीं होगा। तू सदैव भटकता रहेगा।'

बया को दयावान होने, दूसरों की सहायता करने के लिए उसे सुन्दर घर बनाने की कला का वरदान मिला।

आज भी सभी पशु-पक्षियों के अपने घर हैं किन्तु बन्दर का अपना कोई घर नहीं है। वह सदैव भटकता रहता है और पक्षियों में सबसे सुन्दर, मजबूत घर बया का होता है।

पहेलियों के उत्तर :

1. तबले
2. शहद का छत्ता
3. अंडा
4. संतरा
5. रात
6. गन्ना
7. संगीत
8. दीपक की बाती
9. पेंसिल
10. रात
11. बांसुरी
12. छाता

लेख (जीव–जन्तु) : कैलाश जैन

मासूम और खूबसूरत प्राणी खरगोश

खरगोश एक नाजुक, मासूम और निहायत खूबसूरत प्राणी है। सफेद-झक और मुलायम बालों वाला यह जानवर बरबस ही किसी को भी अपने ओर आकर्षित कर सकता है।

शारीरिक संरचना की दृष्टि से सामान्य खरगोश की लम्बाई 18 से 20 इंच तक होती है। इसकी आँखें भूरी व नीली होती हैं। शरीर के अनुपात में इसके कान काफी लम्बे होते हैं। वस्तुत: बड़े और संवेदनशील कान खरगोश को आत्मरक्षा के वास्ते एक प्रकृति-प्रदत्त उपहार है। चूंकि खरगोश एक कमजोर और बाहरी शत्रुओं से अपनी रक्षा कर पाने में असमर्थ प्राणी है। इस कारण बड़े कानों के अधिक क्षेत्रफल की वजह से यह अत्यन्त मद्धम आवाज़ से उत्पन्न हुई ध्वनि तरंगों को भी सरलता से ग्रहण कर लेता है और कुलाचें भरकर अपनी रक्षा कर लेता है। तीव्र श्रवण-शक्ति के अतिरिक्त दूर तक देख पाने की क्षमता और सूंघने की तीव्र व अद्‌भुत शक्ति भी इसकी आत्मरक्षा में मददगार होती है। काफी दूर से यह अपने शत्रुओं की गंध पकड़ लेता है और बचाव में भागकर उनकी पहुँच से बाहर हो जाता है।

खरगोश की पिछली टांगे अगली टांगों की अपेक्षा अधिक बड़ी होती हैं। अपनी इन्हीं टांगों के बल पर कुलाचें भरकर दौड़ना इसका प्रिय शौक है। संकट के समय यह लगभग 65 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से दौड़ सकता है। अपने शत्रु से रक्षा करने के लिए भागता हुआ खरगोश कभी एक दिशा में नहीं दौड़ता, बल्कि भागते

हुए दिशा-परिवर्तन कर अपना पीछा कर रहे शत्रु को चकमा देने की कला में खरगोश को महारत हासिल है। भागते-भागते अचानक दिशा बदलकर किसी झाड़ी, बिल या खोह में गायब हुए खरगोश को उसका शिकरी हतप्रभ हो देखता रह जाता है। जमीन पर बचाव के द्वार बंद हो जाने पर यह पानी में भी छलांग लगाने से नहीं झिझकता।

खानपान के मामले में खरगोश एक शुद्ध शाकाहारी प्राणी है। इसका मुख्य भोजन हरी दूब, घास, नर्म पौधे, सब्जियां, फल, चने आदि हैं। इसके मुँह में दो दंत पंक्तियां होती हैं। जिनकी मदद से यह अपना भोजन कुतर-कुतरकर करता है। गाजर, मूली, शकरकंद आदि की जड़ें व छिलके इसका प्रिय भोजन है। यह खेतों में खड़ी हरी सब्जियों और फलों को खाता रहता है। इस कारण किसान लोग इसे अपना दोस्त नहीं मानते।

यह आमतौर पर समूह-प्रेमी जीव है जो एक बड़े झुंड के रूप में रहना पसन्द करता है। ये भोजन की तलाश में प्रायः सांझ ढले या मुँह अंधेरे निकलता है। शेष समय यह घनी झाड़ियां या लम्बी घास में छुपे रहते हैं।

मादा खरगोश केवल छः माह की आयु में बच्चे उत्पन्न करने लगती है तथा एक वर्ष में यह तीन या चार बार गर्भ धारण करती है। एक बार में मादा खरगोश पांच-छह बच्चों को जन्म देती है। खरगोश की औसत आयु साढ़े सात से आठ वर्ष होती है।

उत्खनन से प्राप्त जीवाश्म के आधार पर प्राणी-शास्त्री उत्तरी अमेरिका को खरगोश का जन्म स्थान मानते हैं। अब तक इनकी तकरीबन 50 से 55 प्रजातियों की पहचान की जा सकी हैं। इनमें सखा, खरहा, अंगोरा, फ्लेमिश, जाएंट आदि मुख्य हैं।

खरगोश की सभी प्रजातियों में सबसे कम वजन के छोटे खरगोश नीदरलैंड तथा पोलैंड में पाये जाते हैं। इस प्रजाति के वयस्क खरगोशों का वजन 900 ग्राम से 1200 ग्राम तक होता है। 'फ्लेमिश' व 'जाएंट' प्रजाति के खरगोश आकार व वजन में सबसे बड़े होते है। इनका औसतन वजन सात से साढ़े आठ किलोग्राम पाया जाता है।

अंगोरा प्रजाति के खरगोशों से बेशकीमती ऊन पाई जाती है। ऐसा माना जाता है कि अंगोरा खरगाशे की उत्पति तुर्की में हुई। जर्मनी में अंगोरा खरगोश से ऊन प्राप्त करने के लिए एक बड़ी परियोजना के तहत आधुनिक व वैज्ञानिक तरीके से खरगोश-पालन का कार्य किया जाता है।

वैज्ञानिक तथ्य

❖ पत्थर को हवा के बजाए पानी में उठाना आसान होता है क्योंकि पानी में पत्थर पर ऊपर की ओर उत्प्लावन बल कार्य करता है।

❖ बादलों की चमक गर्जनें के पहले दिखाई देती है क्योंकि प्रकाश की चाल, ध्वनि की चाल से अधिक होती है।

❖ खाना खाने के बाद हमें नींद आती है क्योंकि शरीर का बहुत सारा रक्त पाचन क्रिया हेतु पेट में चला जाता है और मस्तिष्क में रक्त की कमी होने से हमें नींद आती है।

पढ़ो और हँसो

सोनू ने सोये हुए शेर को लात मारकर जगाया और मोनू से बोला– मोनू भाग।

मोनू बोला– मैं क्यों भागूं। लात मैंने थोड़े ही मारी है।

☺☺☺☺☺

चूहा (बिल्ली से) : बिल्ली मौसी! आज तुम्हारी मेरे यहाँ दावत है।

बिल्ली मौसी : जरूर-जरूर आऊँगी तुमने बुलाया जो है।

बिल्ली मौसी शाम को आई और चूहे से बोली : म्याऊँ-म्याऊँ।

यह सुनकर चूहा बोला : रूको-रूको जरा मैं छुप जाऊँ।

☺☺☺☺☺

बस कंडक्टर : (यात्री से) इतनी जगह पड़ी है, आप बैठ क्यों नहीं जाते?

यात्री : मैं यहाँ बैठने नहीं आया हूँ। मुझे घर जल्दी पहुँचना है।

☺☺☺☺☺

डॉक्टर : पिछली बार याददाश्त बढ़ाने के लिए जो दवा ले गये थे उससे कुछ फर्क पड़ा?

मरीज : अभी तक कुछ फर्क नहीं पड़ा, रोज दवा लेना ही भूल जाता हूँ।

सब्जी बेचने वाले के घर पर बच्चा हुआ तो एक महिला ने कहा– बधाई हो, बच्चा कैसा है?

–एकदम ताजा है बहन जी।– सब्जी बेचने वाले ने कहा।

☺☺☺☺☺

कवि : आपको मेरी कविता पसन्द आई?

एक श्रोता : मुझे उसका अन्त सुन्दर लगा।

कवि : किस जगह?

श्रोता : जब आपने कहा कि कविता समाप्त हुई।

☺☺☺☺☺

थानेदार : (चोर से) तुमने चोरी क्यों की?

चोर : क्यों न करता सर?

थानेदार : इसका क्या मतलब है?

चोर : सर दरवाजे के बाहर लिखा था– 'शुभ स्वागतम्'।

☺☺☺☺☺

सोनिया : (नीतू से) मुझे कोई ऐसा उपाय बताओ कि मैं मोटी हो जाऊँ। सभी लोग मुझे सुकड़ी-सुकड़ी कहते हैं।

नीतू : वो जो तुम्हारी छत पर मधुमक्खियों का छत्ता है न। उसी में हाथ डाल दे। तू मोटी हो जायेगी।

– सीमा (दिल्ली)

मोनू की माँ की तबीयत खराब हुई उसे। अस्पताल ले जाया गया।

डॉक्टर ने कहा– दो 'टेस्ट' होंगे।

मोनू यह सुनकर उदास हो गया और बोला– हे भगवान! अब क्या होगा? मेरी माँ तो अनपढ़ है।

😊😊😊😊😊

–आ जाओ, कुत्ते से डरो नहीं।– एक व्यक्ति ने घर आये मेहमान से कहा।

–क्यों, क्या यह काटता नहीं?– मेहमान ने पूछा।

–यही तो मैं देखना चाहता हूँ। मैंने इसे आज ही खरीदा है।

😊😊😊😊😊

अंकल : देखो मैं नालायक को लायक नहीं बना सकता।

बंटी : लेकिन मैं बना सकता हूँ।

अंकल : वो कैसे?

बंटी : 'ना' हटाकर।

😊😊😊😊😊

एक व्यक्ति होटल में भोजन करने पहुँचा।

बैरा : साहब! हमारे यहाँ आपको बिल्कुल घर जैसा ही भोजन मिलेगा।

व्यक्ति : तो फिर मैं घर जाकर ही भोजन कर लूँगा।

😊😊😊😊😊

ग्राहक : (ढाबे से) तुम्हारे ढाबे में इतनी मक्खियां क्यों हैं?

ढाबे वाला : क्योंकि इनको पड़ोसी ढाबे का खाना पसन्द नहीं है?

– भारतभूषण (खलीलाबाद)

मोनू : पिताजी, यहाँ क्या हो रहा है? इतने सारे लोग क्यों दौड़ रहे हैं?

पिताजी : बेटे, यहाँ 'रेस' हो रही है जीतने वाले को 'गोल्ड मेडल' मिलेगा।

मोनू : अगर जीतने वाले को ही मेडल मिलेगा तो बाकी लोग क्यों दौड़ रहे हैं?

😊😊😊😊😊

नेताजी भाषण करते हुए बोले– हमने राजनीति के मैदान में अच्छे-अच्छे पहलवानों को पछाड़ दिया है।

इतने में एक आवाज आई– आप क्यों सरेआम झूठ बोल रहे हैं? कल रात को ही आपकी पत्नी आपके पीछे बेलन लेकर दौड़ी थी और आप बिस्तर के नीचे छुप गये थे।

😊😊😊😊😊

डॉक्टर : (मरीज से) दो गोलियां सुबह और दो गोलियां शाम को खानी हैं।

मरीज : गोलियां तो खा लूँगा डॉक्टर साहब। पर बन्दूक कहाँ से लाऊँगा

😊😊😊😊😊

सेठ : (नौकर से) तुमने लेटर बॉक्स में खत डाल दिया?

नौकर : नहीं सेठजी?

सेठ : क्यों नहीं डाला?

नौकर : कैसे डालता? हर लेटर बॉक्स के बाहर ताला लगा था।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

बाल कहानी : शिवचरण मंत्री

सीप का मोती

एक थी मछली। वह सागर में रहती थी। उसका रंग सुनहरा था। अत: उसे सब सोना मछली कहते थे। उसके सारे शरीर पर सोने की धारियां थीं। इसलिए सागर में रहने पर भी उसके शरीर में पानी नहीं जाता था। सोना मछली का शरीर लम्बकार था और पीछे एक पूंछ थी। पानी में वह बड़ी तेजी से चलती थी। श्वांस लेने के लिए उसके गले में एक झालर थी।

सोना मछली को सागर में घूमते-घूमते एक मोती मिला। मोती बहुत सुन्दर था। सोना को मोती बड़ा अच्छा लगा। उसके मन में आया मोती को धागे में पिरोकर गले में पहन लूं। पर अंतर्मन से आवाज आई 'नहीं'। सम्भव है किसी का मोती खो गया हो तो वह दु:खी होगा। मोती भी कीमती है। अत: इधर-उधर मालूम करूं और मोती के मालिक को मोती सौंप दूं।

यह सोचकर सोना सागर में मोती के मालिक को ढूंढने निकल पड़ी। वह कुछ आगे बढ़ी कि उसे गोल मोटे सिर वाला ऑक्टोपस दिखाई पड़ा। सोना ने उसे रोका और मोती दिखाकर पूछा– 'क्यों भाई, आपका यह मोती कहीं खो ...?

ऑक्टोपस ने मोती को उलट-पुलटकर देखा। मोती की आभा देखकर उसका मन ललचाया और सोचा 'हाँ' कर दे। पर अंतर्मन ने 'न' कर दी। दूसरों की चीज़ लेने को मना कर दिया। अत: उसने सोनू को मोती लौटाकर कहा– 'मोती मेरा नहीं है।' और जल्दी से वहाँ से आगे बढ़ गया।

सोना इधर-उधर देखते हुए आगे बढ़ी। ज्यों ही कुछ दूर चली कि उसे एक पारदर्शक मछली मिली। इस मछली के कई लटकने थीं। सोना ने इसे आवाज देकर रोका। पारदर्शक मछली रूकी और बोली– सोना, मुझे क्यों रोका?

सोना ने मोती दिखाते हुए पूछा– 'क्या यह मोती तुम्हारा है?'

'नहीं! मैं ऐसा मूल्यवान मोती भला कहाँ से लाती? बहन यह मोती मेरा नहीं है।' कहकर वह आगे बढ़ गई।

सोना पारदर्शक मछली को देखती ही रह गई।

इसके बाद वह मोती के मालिक का पता लगाने के लिए आगे बढ़ी। उसने कई समुद्री जीवों को रोका तो कोई नहीं रूका। सभी उसकी बात को अनसुनी करके आगे बढ़ते रहे। पर सोना ने हिम्मत नहीं हारी। वह सतत् आगे बढ़ती गई। आगे बढ़ी तो सोना कुछ निराश हुई कि उसे सामने सीप दिखाई दी। उसने सीप को रोका। उसे मोती दिखाया। सीप ने उलट-पुलटकर देखा और धीरे से कहा– 'मोती मेरा है।'

'तो आप अपना मोती ले लो। मुझे मोती का मालिक मिल गया।' सोना ने खुश होकर कहा।

'मुझे यह मोती नहीं लेना। यह मोती तुम अपने पास रखो। मैं ऐसा मोती और बना लूंगी।'

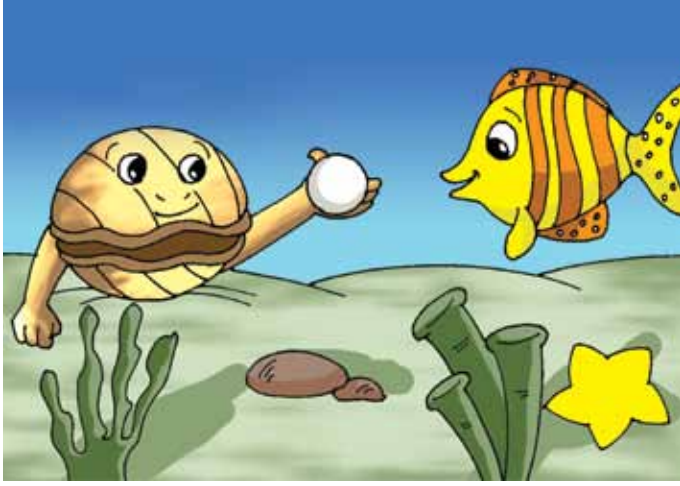

'आप मोती बनाती हैं?'

'हाँ।'

'कैसे?' सोना ने चकित होकर पूछा। 'क्या आप मुझे मोती बनाना सिखा सकती हैं?'

'नहीं प्रकृति ने मुझे ही यह शक्ति प्रदान की है। मेरे शरीर में दो प्रकार के सीप के छिलके होते हैं। उनमें जब बाहर से कोई बाहरी कण प्रवेश करता है तो वह मुझे चूमता है और मैं उस पर इस प्रकार मोती के द्रव्य का स्राव करती हूँ और धीरे-धीरे मोती बन जाता है।' सीप ने इतना कहा और आगे बढ़ गई।

सोना ने मोती को धागे में पिरोकर पहन लिया और मौज से घूमने लगी।

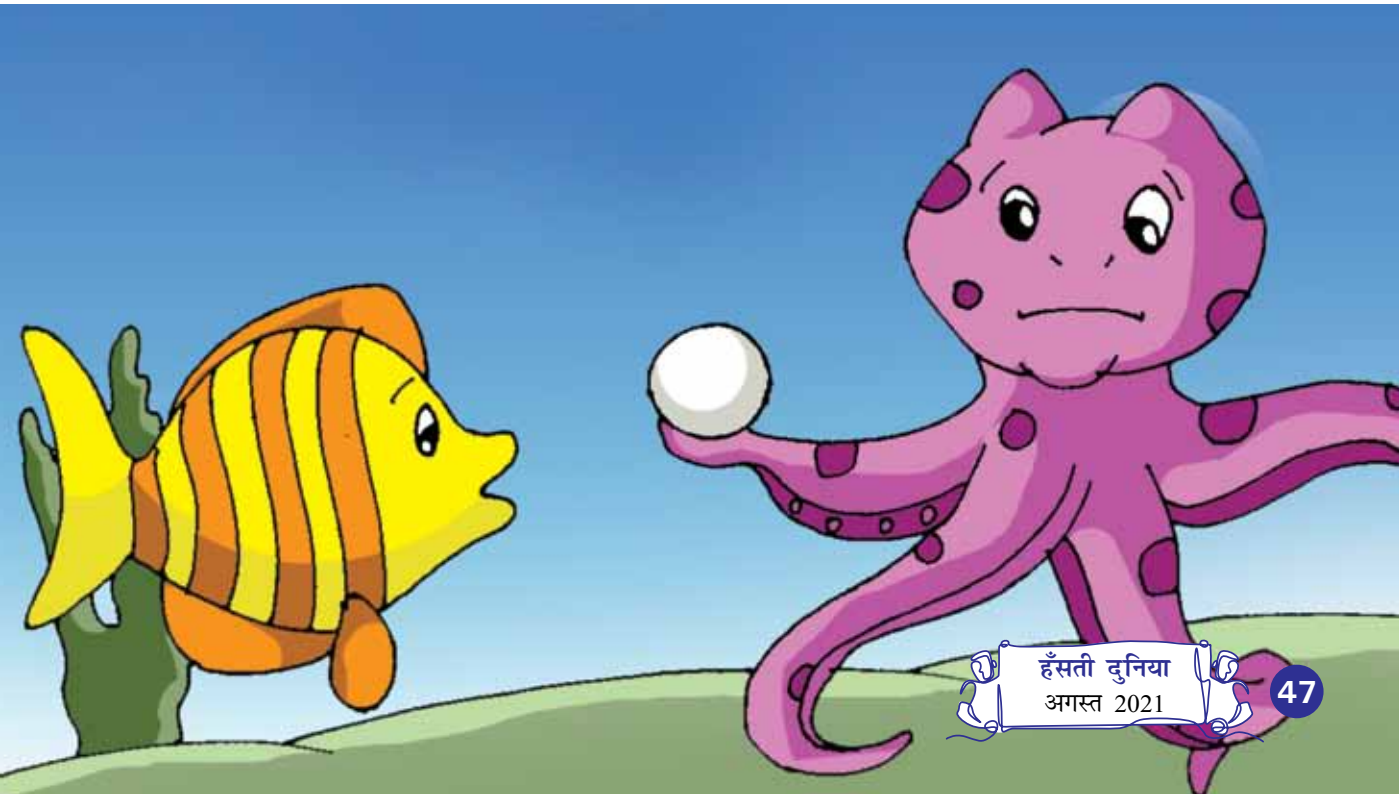

मई अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. सेफाली गौतम 14 वर्ष
   गाँव : सुरैला, पोस्ट : परसरामपुर, जिला : बस्ती (उ.प्र.)

2. रजत रावल 13 वर्ष
   ई-87, आर्य समाज रोड, उत्तम नगर, नई दिल्ली

3. विवेक चौहान 14 वर्ष
   म. नं. 1185/13, सुन्दर नगर, पोस्ट : एच.एम.टी. कॉलोनी, अजमेर (राजस्थान)

4. स्वर्णजीत राणा 11 वर्ष
   सन्त निरंकारी सत्संग भवन, आदर्श नगर, सतनामपुरा, फगवाड़ा (पंजाब)

5. रीतिका 13 वर्ष
   म. नं. 563, सेक्टर : 13, अर्बन इस्टेट, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसन्द किया गया वे हैं-

अजय कुमार (नेठवा, चुरू), अद्वितीय मेहरा (सुन्दर नगर, अजमेर), मानव (अवतार इन्क्लेव, दिल्ली), जिया (रानी बाग, दिल्ली), खुशी (अशोक विहार कॉलोनी, नकोदर), समदृष्टि (रोहिणी, दिल्ली), अरुण पंजवानी (धनपुरी), पूनम (जनरल गंज, कानपुर), अभिजीत, अलका (बंशीपुर, चन्दौली), सुरिन्दर (सेंट्रल टॉउन, लुधियाना), लवलीन, निहारिका (मोहाली), गर्विता (विकास नगर, भिवानी), काश्वी (डाबड़ा चौक, हिसार), हर्षिता (जलालाबाद, फाजिल्का), यूवान (मीरा कॉलोनी, संगरिया), श्रेष्ठा (कंचनपुरी कॉलोनी, लखीमपुर खीरी), कुश, कृष्णा, चिराग, कृष्णा समनानी, मयूर, आरती, हार्दिक, सुमित (गोधरा)।

अगस्त अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 30 अगस्त तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

★ पांच सर्वश्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) अक्टूबर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

★ चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

★ 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

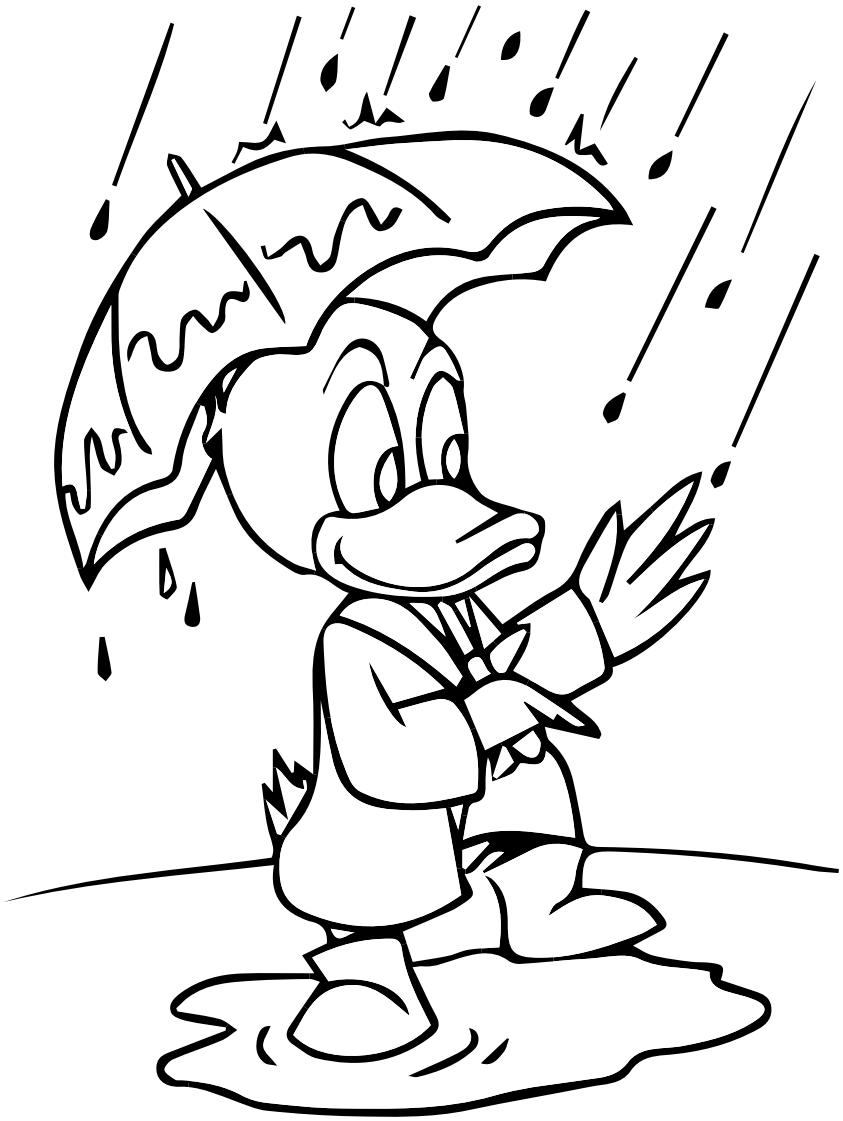

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

❀ संग्रहकर्ता : जगतार चमन

कभी न भूलो

❖ भाग्य को वही कोसते हैं जो कर्महीन होते हैं।

- जवाहरलाल नेहरु

❖ मार्ग में हजारों रुकावटें आने पर भी अपने मकसद से पीछे न हटो।

– श्रीराम शर्मा

❖ मानव की सेवा करना, मानव का सर्वप्रथम कर्तव्य है।

❖ दोस्ती खुशी को दोगुना करती है और दु:ख को बाँटती है।

– विनोबा भावे

❖ सबसे अच्छा काम वह है जिससे लोगों को ज्यादा से ज्यादा आनन्द मिले।

– फ्रांसिस हैरीसन

❖ अगर आप दूसरों को सुधारना चाहते हो तो पहले आप खुद को सुधारो।

– रामाचार्य

❖ अक्लमंद व्यक्ति बोलने से पहले सोचता है, बेवकूफ बोल लेता है। वह बाद में सोचता है कि वह क्या बोल गया।

– रस्किन

❖ जो व्यक्ति निश्चय कर लेता है उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।

– इमर्सन

❖ जो कोशिश करता है उससे भूल भी होती है।

-गेटे

❖ प्यार, नम्रता, सत्कार जैसे दैवी गुण ही भक्तों को ऊँचाइयों की तरफ ले जाते हैं।

❖ किसी को भी अपनी गलती को मानने में शर्म नहीं करनी चाहिए।

– पोप

❖ इस शाश्वत नियम को याद रखें– यदि आप कुछ पाना चाहते हो तो आपको कुछ देना होगा।

– सुभाषचन्द्र बोस

❖ रणनीति कितनी भी खूबसूरत क्यों न हो, आपको कभी-कभी परिणामों के बारे में भी सोच लेना चाहिए।

– चर्चिल

❖ जिस प्रकार सुबह दिन का द्योतक होता है, उसी प्रकार शैशव भी प्रौढ़ता का परिचायक होता है।

– मिल्टन

❖ न तो कष्टों को निमंत्रण दो और न उनसे भागो। जो आता है उसे झेलो। किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है।

– स्वामी विवेकानन्द

❖ अपने उसूलों के लिए मैं स्वयं मरने तक को भी तैयार हूँ लेकिन किसी को मारने के लिए बिल्कुल नहीं।

– महात्मा गाँधी

❖ साँप के दाँत में, मक्खी के सिर में और बिच्छू की पूँछ में विष रहता है किन्तु दुर्जन मनुष्य के पूरे शरीर में विष रहता है।

– सन्त कबीर

Nirankari Radio
radio.nirankari.org
24x7
Kids Divine
ek ruhani muskaan
kids.nirankari.org
Catch the latest episode on 23rd of every month
NEWS DIVINE
www.nirankari.org
Catch the latest episode on 10th of every month
Bhakti Sangeet
radio.nirankari.org
Catch the latest episode on 20th of every month
Voice DIVINE
radio.nirankari.org
Catch the latest episode on 1st & 16th of every month
Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month
SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the	:	**Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023**
Registrar of Newspaper	:	**License No. U (DN) -23/2021-2023**
For India Under RNI No. 25672/1973	:	**Licensed to post without Pre-payment**

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं 'निरंकारी वेबसाइट' पर

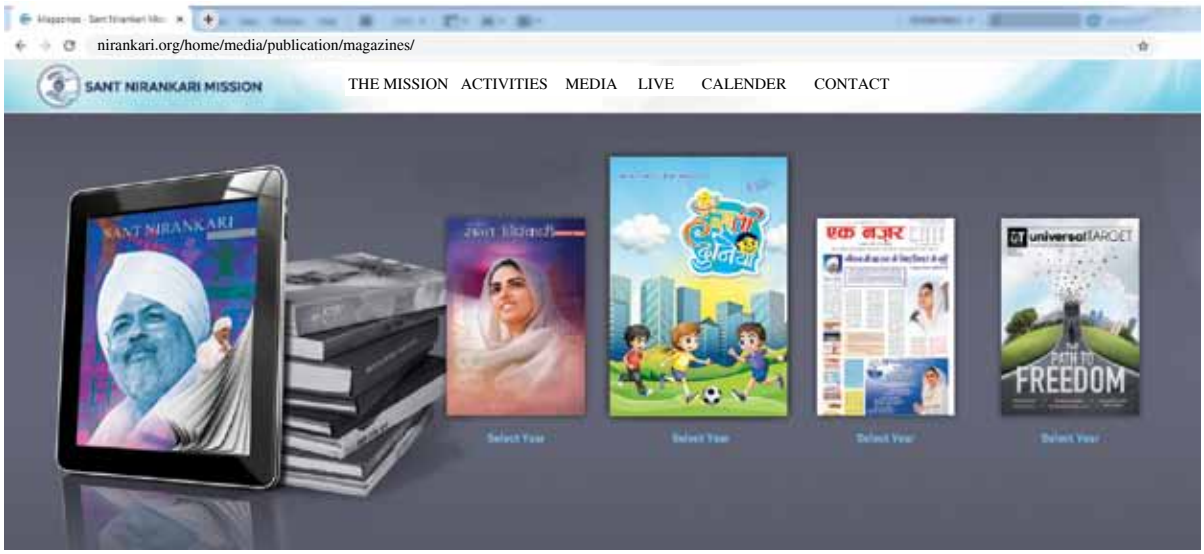

निरंकारी वेबसाइट पर सभी भाषाओं की 'हँसती दुनिया' , 'सन्त निरंकारी' एवं 'एक नज़र' को पढ़ने के लिए इन निर्देशों का पालन करें–

www.nirankari.org को **open** करेंगे तो **Main** पेज पर आपको **THE MISSION, ACTIVITIES, MEDIA and GALLERY** दिखाई देंगे। आपको **MEDIA** के **PUBLICATIONS option** को क्लिक करना है। यहाँ आपको सम्पूर्ण अवतार बाणी, सम्पूर्ण हरदेव बाणी, **E-BOOKS, Articles** और **Magazines** दिखाई देंगे। **Magazines** को क्लिक करते ही सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र तथा **Universal Target** के पेज खुल जाएंगे। यहाँ आप जो भी पत्रिका पढ़ना चाहते हैं, पढ़ सकते हैं।

– प्रबन्ध सम्पादक, पत्रिका विभाग

पाठकों के लिए सूचना ...

❖ क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

❖ पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि **एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया–**

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

– प्रबन्ध सम्पादक

पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,

निरंकारी कॉम्प्लेक्स, बुराड़ी रोड, दिल्ली-110009

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें।